मार्च-२०१६ ◆ वर्ष ४ ◆ अंक १० ◆ उदयपुर

ओ३म्

सत्यार्थ सौरभ

मासिक

मार्च-२०१६

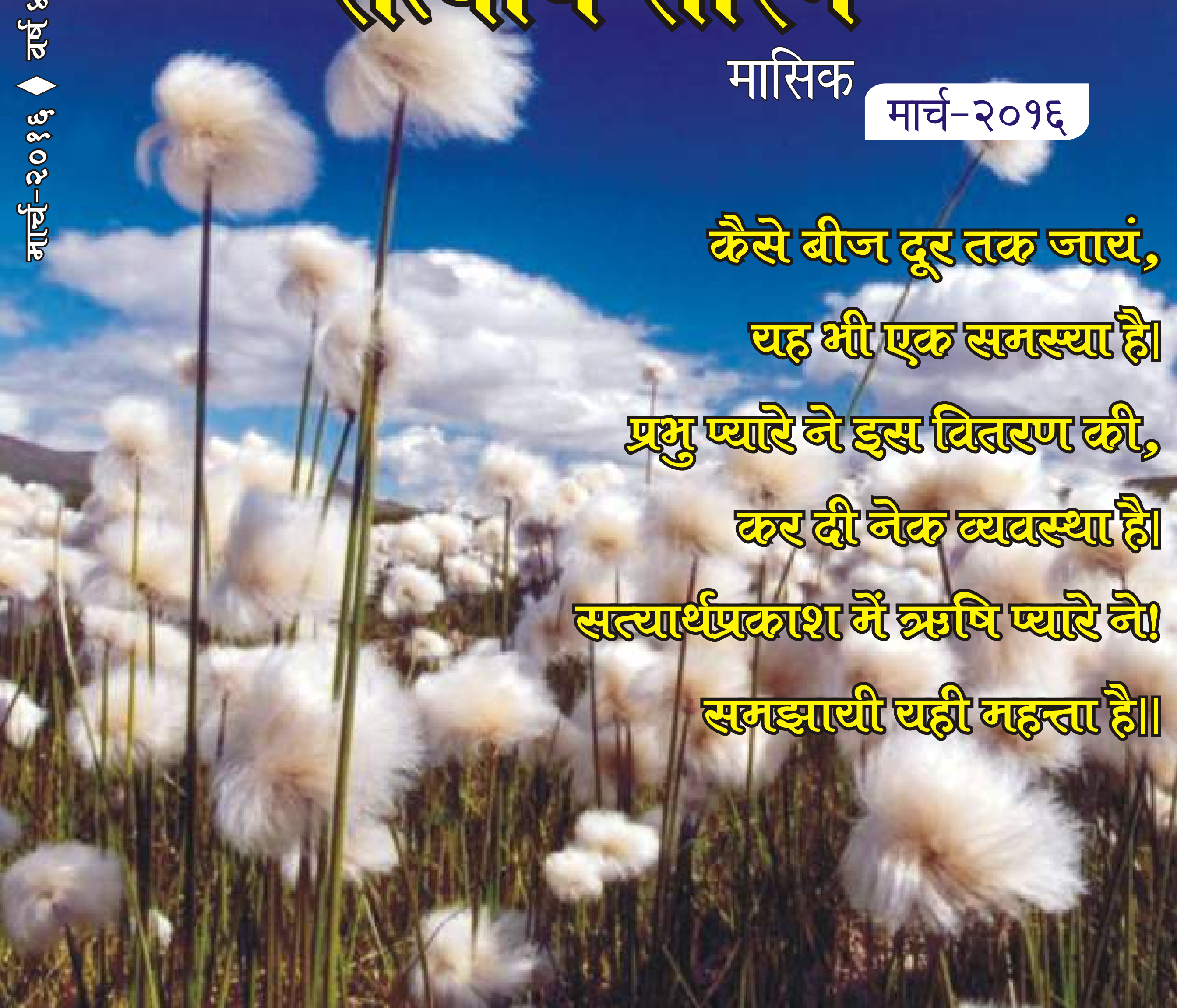

कैसे बीज दूर तक जायं,
यह भी एक समस्या है।
प्रभु प्यारे ने इस वितरण की,
कर दी नेक व्यवस्था है।
सत्यार्थप्रकाश में ऋषि प्यारे ने!
समझायी यही महत्ता है।।

श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास

नवलखा महल परिसर, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग,
उदयपुर-313001 (राज.)

₹ १० ५१

सब्ज़ी में आये स्वाद, मसाले पड़ें कम ! एम.डी.एच. मसालों में है, इतना दम !

जब आप स्वादिष्ट सब्जियों का आनन्द उठाते हैं तो जान लीजिये कि सब्ज़ी का अपना कोई स्वाद नहीं होता, स्वाद आता है मसालों से।

सब्जी सस्ती हो या महंगी उसका स्वाद बनता है मसाले से। सब्जी बनाने में जितनी भी चीज़ें इस्तेमाल होती हैं जैसे - सब्जी, घी - तेल, मसाले, गैस आदि, उनमें सबसे सस्ता सिर्फ मसाला ही होता है जो कि सब्जी के स्वाद को बनाने के लिए बहुत महत्त्वपूर्ण होता है।

एम.डी.एच. मसाले प्राकृतिक रूप से शुद्ध एवं उत्तम क्वॉलिटी के साबुत मसालों से तैयार होते हैं, इसलिए यह दूसरों के मसालों के मुकाबले में कम पड़ते हैं।

एम.डी.एच. मसालों की श्रेष्ठ क्वॉलिटी और शुद्धता का रहस्य महाशियाँ दी हट्टी के चेयरमैन महाशय धर्मपाल जी का 80 वर्षों का अनुभव, लगन, मेहनत और मसालों की परख है। वह किसी भी मिर्च - मसाले की शुद्धता और गुणवत्ता का अनुमान उसे जरा सा हाथ में लेकर और सूंघकर कर लेते हैं। केवल बेहतरीन चुने हुए साबुत मसालों के मिश्रण से ही एम.डी.एच. मसाले बनते हैं।

MDH

मसाले

असली मसाले सच-सच

महाशियाँ दी हट्टी (प्रा०) लिमिटेड

ESTD. 1919 9/44, कीर्ति नगर, नई दिल्ली-110015 Website : www.mdhspices.com

सत्यार्थ प्रकाश की शिक्षाओं को अपने आँचल में समेटे, सम्पूर्ण परिवार के लिए, हर आयु समूह के लिए, पठनीय और समर्पित

न्यास का मासिक मुखपत्र

सत्यार्थ सौरभ

प्रमुख संरक्षक - सत्यार्थ सौरभ

महाशय धर्मपाल जी (एम.डी.एच.)
डॉ. सुखदेव चन्द सोनी (अमेरिका)

परामर्शदाता संपादक मण्डल

डॉ. महावीर मीमांसक
आचार्य वेदप्रकाश श्रोत्रिय
डॉ. ज्वलंत कुमार शास्त्री
डॉ.सोमदेव शास्त्री
डॉ. रघुवीर वेदालंकार
आचार्य वेदप्रिय शास्त्री

सम्पादक

अशोक आर्य

प्रबन्ध सम्पादक

भवानी दास आर्य

प्रबन्ध सहयोग

नवनीत आर्य (मो.9314535379)

व्यवस्थापक

सुरेश पाटोदी (मो.9829063110)

सहयोग ◆ भारत	विदेश
संरक्षक - ११००० रु.	$ 1000
आजीवन - १००० रु.	$ 250
पंचवर्षीय - ४०० रु.	$ 100
वार्षिक - १०० रु.	$ 25
एक प्रति - १० रु.	$ 5

भुगतान राशि धनादेश/चैक/ड्राफ्ट
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास
के पक्ष में बना न्यास के पते पर भेजें।
अथवा यूनियन बैंक ऑफ इण्डिया
मेन ब्रांच टाऊन हॉल, उदयपुर
खाता संख्या : ३१०१०२०१००४१५१८
IFSC CODE- UBIN 0531014
MICR CODE- 313026001
में जमा करा अवश्य सूचित करें।

सृष्टि संवत्
१९६०८५३११६
फाल्गुन कृष्ण त्रयोदशी
विक्रम संवत्
२०७२
दयानन्दाब्द
१९१

March- 2015

सत्यार्थ-सौरभ में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार सम्बन्धित लेखक के हैं। सम्पादक अथवा प्रकाशक का उनसे सहमत होना आवश्यक नहीं है। किसी भी विवाद के प्रतिवाद हेतु न्यायक्षेत्र उदयपुर ही होगा। आपत्ति की अवधि प्रकाशन तिथि से एक माह के भीतर ही मानी जायेगी।

विज्ञापन शुल्क (प्रति अंक)

कवर २ व ३ (भीतरी आवरण) रंगीन ३५०० रु.

अन्दर पृष्ठ (श्वेत-श्याम)

पूरा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	२००० रु.
आधा पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	१००० रु.
चौथाई पृष्ठ (श्वेत-श्याम)	७५० रु.

समाचार २६

हलचल २७

०४ वेद सुधा
०६ हाँ! डर तब लगता है
११ स्वामी श्रद्धान्द
१३ सत्यार्थप्रकाश पहेली- ३/१६
१४ जीवन में यज्ञों का महत्व
१६ आर्य आक्रमण सिद्धान्त
२० प्रतिभा के धनी- लुई ब्रेल
२२ संन्यासी की सहनशीलता
२८ कथा सरित- जूते
२८ स्वास्थ्य- त्रिफला
२६ सत्यार्थ-पीयूष- धर्मो रक्षति रक्षितः

स्वामी श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर

वर्ष - ४ अंक - १०

मुद्रण द्वारा - चौधरी ऑफसेट, (प्रा.लि.) ११-१२, गुरु रामदास कॉलोनी, उदयपुर

प्रकाशक
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास
नवलखा महल, गुलाब बाग, उदयपुर (राजस्थान) ३१३००१
(०२९४) २४१७६९४, ०९३१४५३५३७९, ०९८२९०६३११०
www.satyarthprakashnyas.org, E-mail : satyarthsandesh@gmail.com

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित तथा कार्यालय श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर-313001 से प्रकाशित, सम्पादक-अशोक कुमार आर्य

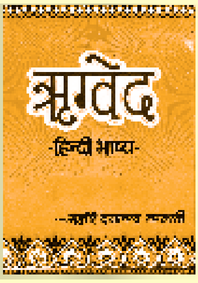

वेद सुधा

सुखी बनने के उपाय

इहैव स्तं मा वि यौष्टं विश्वमायुर्व्यश्नुतम्।
क्रीळन्तौ पुत्रैर्नप्तृभिर्मोदमानौ स्वे गृहे।। – ऋग्वेद १०/८५/४२ **गतांक से आगे ....**

तीसरा ज्ञान सूत्र जो मनुष्य को परम शांति एवं धैर्य प्रदान करता है वह यह है कि जिन महापुरुषों का हम नाम लेते हैं उन्होंने अपने जीवन में हमसे कई गुणा अधिक कष्ट उठाए। यदि हमारे कष्टों की उनके साथ तुलना की जाए तो हम अपने महापुरुषों की अपेक्षा बहुत अधिक सुखी हैं। मर्यादा-पुरुषोत्तम श्रीरामचन्द्र जी महाराज को चौदह वर्ष वनवास भोगना पड़ा। एक राजकुमार जिसे राजसिंहासन पर बैठना था, उसे जंगलों की खाक छाननी पड़ी। वनवास में भी पत्नी से हाथ धोना पड़ा। अनेक विपत्तियाँ उठानी पड़ीं। क्या हम में से किसी ने इतने कष्ट उठाये हैं? परम योगीराज श्रीकृष्ण जी महाराज को अपने जीवन में कंस और जरासन्ध के अत्याचार सहने पड़े। जीवन में अनेक युद्ध करने पड़े। पाण्डवों को कितने कष्टों का सामना करना पड़ा। सीता, कुन्ती और द्रौपदी को कितने कष्ट उठाने पड़े। शंकराचार्य की मृत्यु युवावस्था में ही विष देने के कारण कश्मीर में हुई। ऋषि दयानन्द जी महाराज को जीवन में सत्रह बार जहर पीना पड़ा और अनेक कष्ट उठाने पड़े। उपर्युक्त महापुरुषों और देवियों की जीवन गाथाओं का स्मरण करते हुए हम कह सकते हैं कि हम निश्चितरूप से उन महापुरुषों की अपेक्षा अधिक सुखी हैं।

जीवन में जब भी कोई विषम परिस्थिति आ जाए तो व्यक्ति को भावात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए, अभावात्मक दृष्टिकोण नहीं बनाना चाहिए। इस चौथे ज्ञान सूत्र को अपनाने से भी मनुष्य को अपार शांति प्राप्त होगी। भावात्मक दृष्टिकोण बनाने का अभिप्राय केवल इतना है कि जो कुछ हमारे पास है उसको बार-बार देखें और जो कुछ खो गया है उसकी ओर ध्यान न दें। इस दृष्टिकोण को अपनाने से व्यक्ति का मानसिक सन्तुलन बना रहता है। इस कथन की पुष्टि में मैं दो उदाहरण प्रस्तुत करता हूँ। शीशे के एक गिलास को आधा पानी से भर दिया जाए और आधा खाली रखा जाए तो भावात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति तो यह कहता है कि आधा गिलास पानी भरा हुआ है और अभावात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति कहता है कि आधा गिलास खाली है। ये दोनों दृष्टिकोण मनुष्य की भावात्मक और अभावात्मक प्रवृत्तियों के सूचक हैं। इसी प्रकार का एक दृष्टान्त जो इस बात की व्याख्या में सहायक सिद्ध होगा, उपस्थित किया जाता है। एक अभावात्मक दृष्टिकोण रखने वाला व्यक्ति किसी महात्मा के पास गया। उसने अभावात्मक दृष्टिकोण की बातें उनके समक्ष उपस्थित कीं। महापुरुष ने एक सफेद चादर जिस पर एक काला धब्बा अंकित था, लाकर उसे दिखाई और कहा कि देखो तुम्हें क्या दीखता है? वह व्यक्ति बोला- काला धब्बा दिखता है। महापुरुष ने दूसरी और तीसरी बार पूछा कि तुम्हें क्या दिखता है। फिर वही उत्तर। महापुरुष ने हँसकर कहा- ओ पगले! तुझे काला धब्बा तो दिखता है परन्तु इतनी बड़ी सफेद चादर नहीं दिखती? अतः जीवन में यदि हम सुख के इच्छुक हैं तो हमें अभावात्मक दृष्टिकोण नहीं अपनाना चाहिए, बल्कि भावात्मक दृष्टिकोण अपनाना चाहिए।

इसी प्रकार की विषम परिस्थितियों में व्यक्ति को पांचवाँ ज्ञान सूत्र यह धारण करना चाहिए कि जैसी परिस्थिति आए, व्यक्ति उसके अनुसार अपने आपको ढाल ले। इसी में उसके जीवन की सफलता है, अन्यथा व्यक्ति अपना मानसिक सन्तुलन खो बैठता है। ऐसा दृष्टिकोण बनाने की आवश्यकता है कि निर्धनता है तो भी ठीक है और सधनता है तो भी ठीक है, रुग्णता है तो भी ठीक है और नीरोगता है तो भी ठीक है, सन्तान है तो भी ठीक है और सन्तानहीनता है तो भी ठीक है। सुख है तो भी ठीक है और दुःख है तो भी ठीक है। जिस व्यक्ति ने ऐसा दृष्टिकोण बना लिया है वही गीता की परिभाषा के अनुसार स्थितप्रज्ञ एवं समत्वयोगी है। गीता में इसी बात को बड़े सुन्दर ढंग से कहा गया है-

यः सर्वत्रानभिस्नेहस्तत्तत्प्राप्य शुभाशुभम्।
नाभिनन्दति न द्वेष्टि तस्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता।। – गीता २।५७

अर्थात् जो सब जगह स्नेह से रहित है, उस-उस मंगल और अमंगल को प्राप्त करके न प्रसन्न होता है और न द्वेष करता है, उसकी बुद्धि स्थिर है।

इस तथ्य को एक उदाहरण के रूप में प्रस्तुत किया जाता है। कहते हैं कि एक महात्मा जंगल में रहा करते थे। उनके पास एक व्यक्ति आया और कहने लगा कि आप मुझे अपना शिष्य बना लें। महात्मा ने कहा तथास्तु। महात्मा ने उसे एक गाय दे दी और कहा कि इसकी सेवा किया करो और दूध पिया करो। उन्होंने उसे गायत्री मंत्र भी सिखा दिया और कहा कि इसका जाप किया करो। वह व्यक्ति प्रतिदिन गाय को चराता, दोनों समय उसका दूध पीता और प्रातः सायं बड़े मनोयोग से गायत्री मंत्र का जाप करता। एक दिन वह महात्मा जी के पास गया और कहने लगा, महात्माजी! बहुत आनन्द है। महात्मा जी ने पूछा क्या आनन्द है? वह कहने लगा कि गाय चराता हूँ, दूध पीता हूँ और गायत्री मंत्र का जाप करता हूँ। यह सुनकर महात्माजी कहने लगे कि ठीक है। कुछ दिन के पश्चात् दैवयोग से गाय गुम हो गई। अब उस व्यक्ति को बहुत परेशानी हुई। गाय गुम हो गई, दूध मिलता नहीं था और मन जाप में लगता नहीं था। घबराया हुआ वह महात्मा जी के पास आया और उसने अपनी दुःखभरी गाथा सुनाई। महात्मा जी सुनकर मुस्कराए और कहने लगे, यह भी ठीक है। कुछ दिन के पश्चात् वह गाय मिल गई। बस फिर क्या था। वही आनन्द और वही मौज-बहार। दूध मिलने लगा, पेट भरने लगा और भजन में आनन्द आने लगा। महात्मा जी के पास आकर उसने फिर सुखमयी स्थिति का वर्णन किया। महात्मा जी कहने लगे, यह भी ठीक है। शिष्य ने आश्चर्यचकित होकर पूछा, 'गुरुजी क्या बात है? जब गाय थी तब आपने कहा ठीक है, जब गाय गुम हो गई तब भी कहा ठीक है, और अब गाय मिल गई तब भी कहा ठीक है।' गुरुजी कहने लगे जीवन बिताने का यही सर्वोत्तम ढंग है। जैसी परिस्थिति हो, उसे ठीक समझो और उसके अनुकूल अपने आपको ढाल लो। इसी में जीवन की सार्थकता है और जीवन में सफलता प्राप्ति का यही सर्वोत्तम मार्ग है। स्वामी रामतीर्थ जी ने भी इसी बात को कहा है-

राज़ी हैं हम उसी में जिसमें तेरी रजा है।
याँ यूँ भी वाह-वा है और वूँ भी वाह-वा है।।

ऐसी विषम परिस्थितियों में छठा ज्ञान सूत्र जो अपनाने योग्य है, वह है चिन्ता मत कीजिए। चाहे गृहस्थ के जीवन में कोई भी विपत्ति आ जाए उसे चिन्तित नहीं होना चाहिए। चिन्ता करने से आज तक कोई समस्या नहीं सुलझी। इसके विपरीत समस्या तो वहीं की वहीं रहती है लेकिन कई और नई समस्याएँ खड़ी हो जाती हैं जैसे रक्तचाप और हृदयगति की रुकावट। उपर्युक्त जितनी भी समस्याएँ लिखी गई हैं उनमें से किसी का भी समाधान चिन्ता से नहीं हो सकता बल्कि नये शारीरिक रोग खड़े हो जाते हैं। अतः मानसिक सन्तुलन को बनाए रखने के लिए यह आवश्यक है कि चिन्ता से दूर रहा जाए।

चिन्ता के स्थान पर मनुष्य को चिन्तन और प्रयत्न का मार्ग अपनाना चाहिए। चिन्ता न करके व्यक्ति चिन्तन करे, अर्थात् उस समस्या की निवृत्ति के लिए उपाय सोचे। जब व्यक्ति उपाय सोचता है तो उसे समाधान के रास्ते सूझते हैं। जब रास्ते सूझते हैं तो फिर उस प्रयत्न को अपनाना चाहिए जिससे समस्या का समाधान किया जा सके। प्रयत्न करने के पश्चात् भी यदि कार्य सिद्ध न हो तो चिन्तन और प्रयत्न दोनों छोड़ देने चाहिए। उस समय यह समझना चाहिए कि भाग्य-दोष के कारण ऐसा हो रहा है-

यत्न कृते यदि न सिद्ध्यति कोऽत्र दोषः।

यदि यत्न करने पर भी सिद्धि न मिले तो इसमें कोई दोष नहीं है। चिन्ता के साथ शोक आदि करना भी व्यर्थ है। मनुष्य को हर समय चिन्तन करना चाहिए-

तक़सीम किया हर शख़्स को क़स्सामे-अज़ल ने,
जो शख़्स कि जिस चीज़ के काबिल नजर आया।
बुलबुल को दिया नाला तो परवाने को जलना,
ग़म हमको दिया सबसे जो मुश्किल नजर आया।।

- प्रो. रामविचार एम. ए.
(साभार- वेद संदेश)

क्रमशः ....

आत्म निवेदन

हाँ ! डर तब लगता है

अब यह तय है कि जातिप्रथा तथा मजहबी सोच भारत से कभी विदा नहीं होगी, यद्यपि तमाम बुद्धिजीवी, सभी नेतागण इनकी भर्त्सना करते हैं तथा करते रहेंगे परन्तु उनके वोट बैंक के मायाजाल को इन्हीं के रक्त से पोषण मिलता है अतः कोई भी घटना-दुर्घटना घटे सबसे पहले यह सोचा जाता है कि क्या इसे जातिवादी अथवा मजहबी रंग दिया जा सकता है? अगर हाँ,

तो बाक़ी सारे तथ्य नेपथ्य में चले जाते हैं और चर्चा में रह जाती है जाति अथवा मजहब। वह भी तब जबकि घटना में तथाकथित अल्पसंख्यक अथवा दलित जाति का इन्वोल्वमेंट हो। अगर घटना का पात्र केवल तथाकथित सवर्ण है अथवा बहुसंख्यकों से सम्बंधित है तो फिर घटना की 'न्यूज वेल्यू' नहीं रहती।

यही आज के हिन्दुस्तान का सच हो गया है। समाचार देने की पद्धति यही हो गयी है। किसी लड़की के साथ रेप हुआ, अगर वह दलित है तो समाचार छपेगा कि 'एक दलित लड़की से बलात्कार।' अब मुख्य अपराध बलात्कार गौण हो जाता है लड़की का दलित होना महत्वपूर्ण। रेपिस्ट के लिए वह केवल लड़की थी जिसके साथ उसे अपनी हवस मिटानी थी संयोग था कि वह दलित वर्ग की थी। अब सारा जोर उसके दलित होने पर लगाया जाता है, अपने-अपने स्वार्थ की राजनीतिक रोटियाँ सिकने लगती हैं। विश्वविद्यालयों तथा महाविद्यालयों में आत्महत्या की कितनी ही घटनाएँ होती रहती हैं, गत वर्षों में दबाब, तनाव, रेगिंग आदि कारणों से कितने ही छात्रों ने आत्महत्या की है परन्तु उनमें से जिनमें उक्त तत्व नहीं थे वे मीडिया के लिए टी.आर.पी. बढ़ाने वाले न होने से और नेताओं के लिए वोट खींचने वाले न होने के कारण सुर्ख़ियों में न आ सके। परन्तु हैदराबाद केन्द्रीय विश्वविद्यालय के छात्र रोहित के केस में सारा मसाला था। हमें एक छात्र की आत्महत्या का पूरा अफ़सोस है परन्तु हम घटना के राजनीतिकरण की चर्चा कर रहे हैं अत दुःखी मन से ही सही यह लेखन करना पड़ रहा है। समाचार छपा दलित छात्र द्वारा आत्महत्या। इस दुर्घटना में मीडिया तथा राजनेताओं के लिए पूरा अवसर है अतः पूरे देश में सुर्खी लिए सबसे बड़ी खबर है। केजरीवाल जी दौरा कर आये हैं, हमें ध्यान नहीं कि वे इससे पूर्व आई.आई.टी. तथा मेडीकल कॉलेजों में आत्महत्या करने वाले छात्रों के यहाँ कभी गए थे और यहाँ केजरीवाल जी ही क्यों राहुल जी भी अनशन में सहभागिता दिखा आए। आत्महत्या नहीं रोहित के दलित होने को भुनाया गया जबकि एक खबर यह भी है कि रोहित दलित नहीं वल्कि सुशील जिसकी रोहित तथा उसके साथियों ने पिटायी की थी और जिसके बाद इस केस में क्रमिक कार्यवाहियाँ हुयीं थीं उसकी भाँति पिछड़े वर्ग का सदस्य था (रोहित के चाचा तथा दादी ने भी स्वयं को वडेरिया समुदाय (पिछड़ा वर्ग) का होना बताया है। अर्थात् रोहित तथा सुशील जिनका झगड़ा हुआ था दोनों ही पिछड़ी जाति के सदस्य थे, हाँ दोनों अलग-अलग राजनीतिक विचारधारा से जुड़े थे। इसमें भी सुशील का अखिल भारतीय विद्यार्थी परिषद् से जुड़ा होना राजनेताओं के मन को भा गया। सुशील का आरोप है कि रोहित और उसके साथी केवल अम्बेडकर विचारधारा तक सीमित नहीं थे। सोशल साइट्स से पता चलता है कि रोहित ने याकूब मेनन की फाँसी का विरोध और बीफ पार्टी का समर्थन किया। झगड़े की मुख्य वजह थी उनके द्वारा नारे लगाना कि तुम एक याकूब को मारोगे हर घर से याकूब पैदा होगा। सुशील ने इनका विरोध किया तो ४०-४५ लोगों, जिनमें रोहित भी शामिल था, ने सुनील की पिटायी कर उससे माफीनामा लिखवाया। सुशील की माँ ने अधिकारियों का दरवाजा खटखटाया। बाद में रोहित आदि का निलंबन, मानव संसाधन द्वारा विश्वविद्यालय प्रशासन द्वारा जानकारी हेतु पत्र तथा स्मरण पत्र लिखना आदि घटे। मंत्रालय ने केवल जानकारी माँगी किसी प्रकार की कार्यवाही के कोई निर्देश नहीं दिए, यह स्पष्ट है। विश्वविद्यालय प्रशासन ने रोहित व पाँच अन्य को निष्कासित किया वह भी कक्षाओं से नहीं। बाद में रोहित वेमुला ने आत्महत्या कर ली। अपने सुसाईड नोट में किसी को आरोपित नहीं किया। अब राजनीति का कार्य प्रारम्भ हुआ और स्तीफों की माँग, सफाई देने आदि का क्रम चला। इस सब के बीच में मुख्य प्रश्न कि कालेजों तथा विश्वविद्यालयों में छात्रों द्वारा पढ़ाई तथा राजनीति की कोई सीमा तय करनी चाहिए या नहीं? छात्रों के लिए क्या श्रेयस्कर है? इस पर कोई अकादमिक चिन्तन नहीं हुआ। इसके साथ ही जातिवाद के व असमानता के जहर को पूर्णरूपेण समाप्त करना

चाहिए (और उसका एक ही मार्ग है जो महर्षि दयानन्द द्वारा दिखाया गया है) इस पर कोई सार्थक चर्चा नहीं हुयी। यह तो रही बात जातिवादी मानसिकता के सुदृढ़ीकरण की। इससे भी अधिक चिन्त्य है मजहब के घालमेल की ।

पिछले महीनों में घटित घटनाओं और उनपर समाज के रहनुमाओं की प्रतिक्रियाओं का विश्लेषण करने पर स्पष्ट होता है कि जिस दिशा में देश जा रहा है चिन्ता का निश्चय विषय है। दादरी में अखलाख की हत्या हुई जो निश्चित निंदनीय थी परन्तु उत्तर प्रदेश में घटित इस घटना को बड़ी चालाकी से इस प्रकार का रूप दिया गया कि मोदी के नेतृत्व में देश में भयंकर असहिष्णुता पनप रही है। अचानक अनेक लेखक, कलाकार अपने पुरस्कार जिनसे उनको उनकी प्रतिष्ठा के लिए देश ने अलंकृत किया था वापस करने लगे। मीडिया भी लाल सुर्ख हो गया। परन्तु इसके बाद पश्चिम बंगाल के मालदा में डेढ़-दो लाख लोगों की भीड़ एकत्रित होती है और सरकारी संपत्ति को भीषण नुकसान पहुँचाती है, बी.एस.एफ़ की गाड़ियाँ भी जला दी जाती हैं। इतनी बड़ी हिंसा का कोई नोटिस नहीं लिया जाता। कारण एक ही नजर आता है कि यह भीड़ और हिंसा की यह कार्यवाही उनके द्वारा की गई जिनके पास एक बहुत बड़ी

ताकत है वह है उनका वोट और सारे दल नदीदों की तरह उस पर निगाह गड़ाए हुए हैं, कोई उनका विरोध नहीं चाहता अतः लीपापोती ही ठीक है। सभी चैनल्स भी खामोश हैं, धर्म निरपेक्षता के झंडाबरदार भी जाने कहाँ गए और एवार्ड वापिसी टीम और तथाकथित वुद्धिजीवी भी अपने खोल में चले गए। अखबार में एक आईसोलेटेड खबर पढ़ जिन्हें देश में रहने में डर लगने लगा था इतने बड़े पैमाने पर लाखों लोगों द्वारा देश की सेना पर ही आक्रमण किये जाने को देख उन्हें कोई डर नहीं लगा। क्या यह दोहरा मानदंड नहीं है? यह कैसी धर्म निरपेक्षता है?

सारे चैनल्स की खामोशी के मध्य एक चैनल ने दृढ़ता के साथ इन प्रश्नों को रखा। आजम खान से भला कौन परिचित नहीं होगा। उन्होंने आर.एस.एस. के लोग विवाह क्यों नहीं करते इस रहस्य के उद्घाटन में अपनी गंदी सोच को एक बार और उजागर करते हुए उन पर समलैंगिक होने का दोष मढ़ दिया। सर्वत्र खामोशी। 'कोई भी किसी के विरुद्ध ऐसी गिरी हुई बात नहीं कह सकता का ढोल पीटने वाले विश्राम कर रहे थे? क्रिया की प्रतिक्रया हिन्दू जैसे सहिष्णु समुदाय को करनी ही नहीं चाहिए यह प्रायः माना जाता है अतः कमलेश तिवारी, लखनऊ ने आजम जैसा एक बयान पैगम्बर मोहम्मद को लक्ष्य कर दे दिया तो हंगामा बरप गया।

[हम न आजम खान का और न ही कमलेश तिवारी का समर्थन कर सकते हैं पर यह भी है कि ऐसे सभी लोग चाहे वह कोई भी हों उनके विरुद्ध देश के कानून के अनुसार कार्यवाही होनी चाहिए। दूसरे यहाँ यह अवश्य विचारणीय है कि अगर किसी बात में सत्य व तथ्य है तो उसे प्रकट करने की स्वतंत्रता जो कि संविधान प्रदत्त है उसकी क्या सीमा होनी चाहिए अथवा होनी भी चाहिए या नहीं।]

कमलेश तिवारी को एन.एस.ए. के अंतर्गत गिरफ्तार कर जेल में डाल दिया गया है, कानून आजम के केस में न सही कमलेश के केस में अपना कार्य कर रहा है। इस देश का अपना संविधान है, अपनी न्याय प्रणाली है, उस पर किसी समुदाय का व्यक्ति हो उसे विश्वास करना चाहिए। अतः कमलेश के खिलाफ कानून को अपना कार्य करने देना चाहिए। परन्तु अंत यहाँ नहीं हुआ। हमें एक बड़ी भीड़ को नेतृत्व प्रदान करते हुए एक मौलाना दिखाई देते हैं वे सरे आम टी.वी.चैनल्स के सामने कहते हैं कि या तो सरकार कमलेश को मृत्यु दंड दे, नहीं तो वे और उनके साथी उसका सर कलम करेंगे ही। इसके लिए वे एक राशि की घोषणा करते हैं। यह एक ऐसा दृश्य है जिसे देख, यह देश किस दिशा में गति कर रहा है, इस बाबत् डर महसूस होना चाहिए। मत-निरपेक्ष भारत में बाकई यह दृश्य डरावना है। अभी यहाँ अंत नहीं है। एक टी.वी. चैनल में चल रही बहस के दौरान एक मौलाना टी. वी. एंकर से साफ़ कहते हैं कि तुम अभी हमारे पैगंबर को अपशब्द कहो मैं अभी तुम्हारा सर काट कर खींच कर ले जाऊँगा।

दो राष्ट्रीय चैनलों ने इन सारे विषयों पर बहस रखी। दोनों चैनल्स पर उत्तर प्रदेश में सत्तारूढ़ पार्टी के प्रवक्ता उपस्थित हुए। दोनों अलग-अलग थे पर दोनों का मत स्पष्ट था कि सरकार को ऐसा कानून बनाना चाहिए कि किसी भी धर्म का किसी के

द्वारा भी अपमान किया जाय तो उसे मृत्युदंड देना चाहिए। वही बात जो सड़कों पर कही जा रही थी किंचित शालीनता से राजनेताओं द्वारा चैनल पर कही जा रही थी। पर सोचना यह है कि संविधान बनाते समय हमारे नेताओं ने देश का चेहरा मत निरपेक्षता का रखा था, ऐसे में ईश-निंदा जैसे कानून की माँग क्या संविधान विरोधी नहीं है? जो भी हो देश के राजनेताओं तथा समाज के एक वर्ग की यह बदलती सोच वास्तविक डर तथा चिंता उत्पन्न करती है। आज मेरे देश में याकूब मेनन की फाँसी को रुकवाने तथा ईश निंदा जैसे कानून के समर्थन की उठती माँग वास्तविक डर पैदा करती है। शार्ली हेब्दो की घटना के बाद मेरे देश का जिम्मेदार नेता जब उसे 'टिट फार टेट' कहे तो चिंता की बात तो है ही, साथ में प्रश्न भी उपस्थित करती है कि कश्मीर से उजड़ कर सहस्रों की संख्या में शरणार्थी बने कश्मीरी पंडितों के सन्दर्भ में मूक रहने वाले ऐसे सभी बुद्धिजीवी और राजनेता किस प्रकार अपने को निष्पक्ष कह पायेंगे? प्रख्यात् कलाकार एम. एफ़. हुसैन द्वारा हिन्दू देवी देवताओं के अत्यन्त आपत्तिजनक चित्र बनाने पर रोकना तो दूर उन्हें सिक्योरिटी प्रदान करना क्या निष्पक्ष कदम था? वेंडी डोनिगर द्वारा अपनी किताब में भारतीय महापुरुषों के संदर्भ में ऐसी ही बातें लिखने पर जब अदालत ने किताब पर रोक लगाने के साथ बिकी हुईं किताबों को वापस लेने का आदेश दिया तो इस देश के धर्मनिरपेक्ष बुद्धिजीवी वेंडी के पक्ष में उतरे तथा अदालत के निर्णय को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की हत्या का दर्जा दिया। ऐसी सलेक्टिव धर्मनिरपेक्षता तो उचित नहीं कही जा सकती। एक सज्जन खुले आम मोहम्मद बिन कासिम जिसने राजा दाहर को जीतने के बाद सिंध में कत्लेआम किया तथा दाहर की बेटियों को उठवा लिया, मुहम्मद गौरी जिसने भारत के गौरव पृथ्वीराज चौहान को धोखे से बंदी बना लिया, अकबर जिसने चित्तौड़ में ३०००० प्रजाजनों की नृशंस हत्या की ऐसे सभी को अपना हीरो बता सकते हैं इस आधार पर कि मुझे अपना मत रखने और उसे अभिव्यक्त करने की पूर्ण आजादी है तो फिर आप किसी को गोडसे को अपना हीरो कहने से कैसे रोक सकेंगे? और अगर रोकते हैं तो क्या यह पक्षपातपूर्ण व्यवहार नहीं होगा?

आज देश के प्रबुद्ध लोगों को वैश्विक परिप्रेक्ष्य में एक विचारधारा की सत्यता को समझना ही होगा और सही निष्पक्ष प्रतिक्रिया देनी होगी। आई.एस. आई.एस. वाले तमाम बर्बर जुल्मों व इंसानियत को शर्मशार कर देने वाली हरकतों को सच्चा इस्लाम कहते हैं। अभी हाल में आश्चर्य हुआ जब अल-अजहर विश्वविद्यालय, मिश्र की एक प्रोफ़ेसर वह भी महिला (प्रो. सऊद सालेह) बिना किसी झिझक के इस आशय का बयान देती हैं कि खुदा ने मुस्लिम मर्दों को यह अधिकार दिया है कि वे गैर मुस्लिम औरतों का रेप कर सकें। ऐसे बेहूदे बयान पर सारे बुद्धिजीवियों की खामोशी क्या कहती है? इसी चेहरे को सामने रख सीरिया आदि स्थानों से जान बचाकर भागे शरणार्थियों को शरण देने में योरोपीय देशों को झिझक हो रही थी। एक मासूम बच्चे की लाश के चित्र को देख सहानुभूति की जो लहर विश्वभर में फैली उसके तहत जर्मनी, स्वीडन आदि ने शरणार्थियों के लिए अपने द्वार खोल दिए। पर शरणार्थियों ने क्या हरकत की? जर्मनी के कोलोन में नववर्ष की पूर्व संध्या पर सुनियोजित रूप से सैकड़ों जर्मन लड़कियों को घेरकर उनके कपड़े उतार शर्मनाक हरकतें कीं। कहते हैं यह 'तहार्रुश' है। बताइये कोई आपको घर दे, कपड़े दे, स्कूल दे आप यह प्रतिफल दें? इस पर भी उसी देश के एक मौलाना यह कहें कि कोलोन में सही हुआ क्योंकि वे औरतें और लड़कियाँ छोटी स्कर्ट पहने तथा पर्फ्यूम लगाए थीं। ऐसे में सर्वत्र मौन, सोचने को मजबूर करता है।

भारत में स्थिति विचित्र है। यहाँ के बुद्धिजीवी की 'सोच' 'सलेक्टिव' है। वह दादरी में डर महसूस करता है पर २ लाख की भीड़ थाने और सेना की गाड़ियाँ फूँक देती है, उसे डर नहीं लगता। पहले में उसे देश में असहिष्णुता बढ़ती दिखायी देती है, दूसरे में नहीं। पश्चिम बंगाल के ही एक ग्राम में एक मुस्लिम अध्यापक मदरसे में राष्ट्रगान सिखा रहा था। ट्रस्टियों द्वारा उस अध्यापक की जमकर पिटायी की गयी पर ममता सरकार अध्यापक को ही दोषी मान रही है। आज भारत में राष्ट्रगान सिखाना अपराध हो गया? यह तथाकथित बुद्धिजीवियों की रुचि का मसला नहीं? इस पर कोई अवार्ड नहीं लौटाया जावेगा? यह भयावह स्थिति आज है जो अनेक प्रकार से समाज को बाँट रही है। और निश्चित रूप से डर पैदा करती है। ऐसे में देश के नेताओं को वोट बैंक की राजनीति का मोह देश-हित में त्याग अपने हृदय पर हाथ रख आत्मा की अर्थात् सत्य की आवाज को सुनते हुए करणीय कर्तव्य का पालन करना चाहिए अन्यथा यह देश आसन्न संकट से जूझने वाला है यह समझ लेना चाहिए।

- अशोक आर्य
चलभाष- ०९३१४२३५१०१, ०९००१३३९८३६

श्रीमद्दयानन्द जयन्ती पर विशेष

आदित्य ब्रह्मचारी दयानन्द

यह बात हम सभी जानते हैं कि महर्षि श्रीस्वामी दयानन्दजी सरस्वती काठियावाड़ निवासी ब्राह्मण जाति में उत्पन्न हुए थे। कौमार अवस्था ही में इन्होंने अपनी तर्कबुद्धि के द्वारा सत्यासत्य का निर्णय करना सीख लिया था। इसलिए वे अवगुण जो बालकों में संग-कुसंग से स्वतः ही पैदा हो जाया करते हैं इनके पास तक न पहुँचने पाये थे। पिता इनकी कुशाग्रबुद्धि देखकर उत्तमोत्तम शिक्षा देते और सबसे प्रथम उनमें धार्मिक शिक्षाएँ दृढ़ करना चाहते थे। स्वामीजी स्वभावतः सन्मार्ग-गामी थे और पिता की शिक्षा को भी ध्यानपूर्वक सुनते व मानते थे, परन्तु उनके मन में यह खोज प्रबल रूप से लगी हुई थी कि वास्तव में कल्याणकारी मार्ग कौन-सा है? मुझसे स्वामी जी ने कहा था कि 'इस अन्वेषण में, मैं किंकर्त्तव्यविमूढ़

था कि शिवरात्रि का दिन आया और मुझ पर ईश्वर की कृपा हुई और मेरा ध्यान मूर्त्तिपूजादि सारहीन कर्मों की तरफ से हट गया।'

स्वामीजी ने किस प्रकार गृहत्याग किया व कैसे-कैसे संकट सहे इस बात से उनके जीवन-चरित्र के पाठक भली-भाँति परिचित हैं। स्वामीजी के सत्संग का जब मुझे सौभाग्य प्राप्त हुआ और मैंने उनमें ब्रह्मचर्य्य के कारण जो सद्गुण देखे वे इस प्रकार हैं-

स्वामीजी पुष्टकाया, दृढ़जत्रु, और बड़े बलिष्ठ थे। उनके शरीर से इस समय के बलवानों की जो तुलना करता हूँ तो बड़ा भारी अन्तर पाता हूँ। उनके अंग-प्रत्यंग ऐसे सुदृढ़ व सुडौल थे कि वैसे आज तक देखने में नहीं आये। वे नित्य प्रति प्रातःकाल योग साधना के लिए जंगल में जाते और प्राणायाम की क्रियाएँ करते थे। एक दिन मैं भी उनके साथ गया तो उन्होंने कुछ प्राणायाम की विधि जो वे मुझे नित्य प्रति सिखाया करते थे, सिखा कर विदा करना चाहा किन्तु मेरी इच्छा उनके साथ ही रहने की हुई। परन्तु स्वामीजी जंगल में दौड़ लगाते थे, इसलिये उन्होंने मुझसे कह दिया कि तुम इतना परिश्रम न कर सकोगे। पर मैंने नहीं माना और मैं भी उनके साथ दौड़ने लगा तो थोड़ी देर बाद थक गया और स्वामीजी बराबर दौड़ते चले गये। शायद उन्होंने पाँच मील से कम की दौड़ न लगायी होगी और लौट आने पर भी उनके फेंफड़े न फूले थे। मैंने उस दिन से यह बात समझ ली कि यह स्वामी जी के पूर्ण ब्रह्मचर्य्य का ही फल है।

स्वामीजी की स्मरणशक्ति इतनी प्रबल थी कि जो विषय एक बुद्धिमान् लिखकर भी समय पर याद नहीं रख सकता उसे वे सदैव याद रखते थे। ५० मनुष्यों के किये गये प्रश्नों का उत्तर वे स्पष्ट रीति से समझा कर प्रत्येक को अलग-अलग दे देते थे। आलस्य, निद्रा और थकान के तो स्वामीजी में चिह्न भी नहीं पाये जाते थे। मैंने जब देखा तभी उनको कुछ न कुछ कार्य करते देखा और मेरे उनके चिर-सहवास में भी ऐसा अवसर कभी नहीं मिला कि किसी समय मैंने स्वामीजी को किसी प्रकार की ओषधी सेवन करते देखा हो। वे प्रातःकाल दूध के साथ ब्राह्मी सेवन किया करते थे।

स्वामीजी की वक्तृत्व शक्ति के लिए इतना ही कह देना पर्याप्त है कि उनका भाषण धारा प्रवाह, दोष रहित और ओजस्वी होता था। श्रुति व स्मृतियों के प्रमाण व शास्त्रों के वचन सुन कर लोग यह जानते थे कि स्वामीजी ने संसार भर के धर्म्म ग्रन्थों का अध्ययन कर लिया है और जो कुछ वे कहते हैं निष्पक्ष, सारगर्भित और निर्भीकता से कहते हैं। एक समय कुछ वेदपाठी ब्राह्मण शाहपुरा में आये और उन्होंने स्वामीजी महाराज को वेद मन्त्र सुनाये। मैंने उन ब्राह्मणों से मंत्रों का अर्थ पूछा तो उन्होंने कहा कि वेद मन्त्रों का अर्थ तो केवल ब्रह्माजी ही जानते हैं; यह सुनकर स्वामीजी ने उनसे यही मन्त्र दूसरी बार बुलवा कर पूरा अर्थ कह सुनाया।

व्याख्यान के समय का यह हाल था कि उनके शरीर में एक ऊँचे दर्जे का जोश उत्पन्न होता था और उनके दिए हुये प्रमाण व युक्तियाँ अकाट्य होती थीं। किन्तु इसके विपरीत शान्ति के समय वे पूरे शान्त व गम्भीर रहते थे। व्यग्रता उनमें देखने को भी नहीं मिलती थी। देशोद्धार का नाम मैंने सबसे प्रथम स्वामीजी के ही

मुख से सुना, वे बड़े देश प्रेमी थे। भारतवर्ष की हीनावस्था देखकर वे बड़े दुःखी होते थे और रातदिन देश के उद्धार की कामना करते थे। उन्होंने मुझे देश हित के अन्य साधनों के साथ यह भी साधन बतलाया कि भारतवासियों को अपने देश के हित के लिये स्वदेशी वस्तुओं का व्यवहार करना चाहिए। ऐसा करने से देश की कारीगरी की वृद्धि होती है। विद्या बढ़ती है और धन की वृद्धि होती है। इन्हीं सिद्धान्तों को लेकर उन्होंने मेरे लिये जोधपुर से देशी खादी मँगवा कर मेरे वस्त्र बनवाये।

स्वामीजी ने देशोद्धार के अन्य अनेक साधनों के साथ शुद्धि कार्य को सबसे प्रथम करणीय और परमावश्यक बतलाया था और यहाँ तक कहा था कि यदि भारतवासी इस परम करणीय कार्य को त्याग देंगे तो हिन्दू जाति का नाम ही उठ जायगा, जैसे काबुल कंधार और गजनी से उठ गया।

हमारे महर्षि त्रिकालज्ञ थे। वे अच्छी तरह से जानते थे कि संसार परिवर्तनशील है और मनुष्य चल प्रकृति वाला होता है। उससे शुभाशुभ कर्म होते ही रहते हैं, और उत्थान व पतन भी अवश्यम्भावी हैं। इन्हीं सिद्धान्तों को लेकर अपने आदि व्यवस्थापकों ने शुद्धि की व्यवस्था दी है। मैंने स्वामीजी से शुद्धि के विषय में कई प्रकार के प्रश्न किये थे जिस पर उन्होंने अनेक उदाहरण व युक्तियों द्वारा मेरे मन को पूर्ण सन्तोष दे दिया था। उस समय का ऋषि के द्वारा बोया हुआ शुद्धि का बीज मेरे हृदय में अंकुरित था। उसी को लेकर मैंने इस शुभ कार्य का आरम्भ किया। मैं मानता हूँ कि अविद्या के कारण मेरे इस कार्य को इस समय भले ही कोई भला बुरा समझे परन्तु हिन्दू जाति की भावी सन्तान इस बात का निर्णय करेगी।

स्वामीजी भारतवर्ष के प्रचलित अनेक मत-मतान्तरों की कड़ी आलोचना करते थे। परन्तु साथ ही वे यह भी कहते थे कि रोगी को कड़वी दवा पिलाये बिना उसका रोग दूर नहीं हो सकता, इसी सिद्धान्त को लेकर मैं मत-मतान्तरों की कड़वी आलोचना करता हूँ, नहीं तो मनुष्य मात्र से मेरा भ्रातृभाव का सम्बन्ध है, मैं उनको सत्पथ पर लाना चाहता हूँ, शुद्ध वैदिक धर्म को जो प्रकृति की थपेड़ से शिथिल हो गया है पुनः देश में प्रचलित करना चाहता हूँ। यों तो जो धर्म सच्चा है वह अपनी सचाई के गुणों के कारण सदैव स्थिर रहता है। उसका विनाश नहीं होता, किन्तु मनुष्यों की मानसिक दुर्बलता के कारण वा विद्या के अभाव से उसमें कुछ परिवर्तन हो जाता है। यही दशा इस समय वैदिक धर्म की है। वह सत्शास्त्रों के अध्ययन से, सच्चे साधु-महात्माओं के उपदेशों से अपने मूल स्वरूप को पा लेगा और ईश्वर की उपासना की सच्ची विधि फिर भारतवर्ष में प्रचलित हो तो भारतवासी शीघ्र ही वैदिक धर्म को ग्रहण करेंगे और मिथ्या मत-मतान्तर मिट जायेंगे।

स्वामीजी के मस्तिष्क में ऐसे ऐसे दिव्यभाव भरे थे कि मैं उनका शतांश भी वर्णन करने में असमर्थ हूँ। इसका मूल कारण यही मालूम हुआ कि महर्षि दयानन्द पूर्ण ब्रह्मचारी थे, और इसी के प्रताप से उनकी सब शक्तियाँ प्रबल थीं। उनमें ब्रह्मचर्य ही एक ऐसी वस्तु थी जिसने उनको एक असाधारण पुरुष बना दिया व देशोत्थान के वे भाव उनके मस्तिष्क में जागृत किये जो वर्णन करना व उनके भाव तथा विचारों की कुछ व्याख्या करना साधारण मनुष्यों का काम नहीं है। इस बात का अनुभव उन्हीं को है जिन्होंने कि महर्षि का सत्संग किया था।

- राजाधिराज, सर नाहरसिंह वर्मा बहादुर (शाहपुरा नरेश)
(साभार- दिव्य दयानन्द)

बच्चों ने देखी नवलखा महल (गुलाबबाग) अवस्थित आर्यवर्त्त चित्रदीर्घा

वैदिक संस्कृति प्रचार अभियान के अन्तर्गत भारत के प्राचीन गौरव से वर्तमान किशोरों तथा युवाओं को जोड़ने के प्रकल्प के अन्तर्गत आज नवलखा महल (गुलाबबाग) अवस्थित आर्यवर्त्त चित्रदीर्घा, सत्यार्थप्रकाश

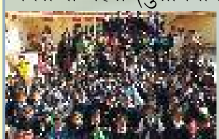

स्तम्भ व श्रीमती ब्रजलता आर्या मल्टीमीडिया सेण्टर का दर्शनार्थ साहू पब्लिक स्कूल, कालाजी गोराजी, उदयपुर से १०० बच्चों तथा १५ शिक्षकों ने बड़ी रुचि के साथ अवलोकन किया। वेद, वैदिक ऋषियों, भारत के वैज्ञानिक ऋषियों, भगवान श्रीराम, भगवान श्रीकृष्ण, महाराणा प्रताप, भारत के क्रान्तिकारी वीरों के जीवन के बारे में जानकारी प्राप्त कर छात्र-छात्राओं ने ज्ञानार्जन किया। इसी दीर्घा में स्थित स्वचालित घूर्णन करते हुए सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ तथा उस पर अंकित सत्यार्थ शिक्षाओं, सत्यार्थप्रकाश चित्रावली के साथ-साथ युगप्रवर्तक महर्षि दयानन्द के जीवन की चित्रमय झाँकी ने समूह को प्रभावित किया। श्रीमती ब्रजलता मल्टी मीडिया सेण्टर में भव्य स्क्रीन पर नवलखा महल का इतिहास, महत्व व महर्षि दयानन्द के जीवन से परिचित कराया गया। न्यास के कार्यकारी अध्यक्ष अशोक आर्य ने बताया कि पूर्वानुमति से आए ऐसे विद्यालय के समूहों को निःशुल्क प्रवेश के साथ नाश्ता भी न्यास की ओर से दिया जावेगा।

फार्म.IV

समाचार पत्र के स्वामित्व और अन्य विशिष्टियों के बारे में विवरण जो प्रत्येक वर्ष फरवरी के अंतिम दिन के पश्चात् प्रथम अंक में प्रकाशित किया जायेगा।

१. प्रकाशन का स्थानः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
२. प्रकाशन की नियत अवधिः– मासिक
३. मुद्रक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
४. प्रकाशक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
५. सम्पादक का नामः– अशोक कुमार आर्य राष्ट्रीयताः– भारतीय
पताः– नवलखा महल, गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१
६. उन व्यक्तियों के, जो समाचार पत्र के स्वामी हैं और उन भागीदारों या शेयरधारकों के, जो कुल पूँजी के 1 प्रतिशत से अधिक अंश के धारक हैं, नाम और पते।
श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल
गुलाब बाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर (राज.) ३१३००१

मैं अशोक कुमार आर्य घोषणा करता हूँ कि ऊपर दी गई विशिष्टियाँ मेरे सर्वोत्तम ज्ञान और विश्वास के अनुसार सत्य हैं।

तारीखः– ०७.०३.२०१६

प्रकाशक के हस्ताक्षर

गुरु विरजानन्द जी से ऋषि दयानन्द ने दीक्षा लेने के बाद व्याख्यानों द्वारा वेदप्रचार करना प्रारम्भ किया। स्वामीजी संस्कृत भाषा में ही वेदप्रचार करते थे, जिसमें मूर्तिपूजा आदि धार्मिक अन्धविश्वासों का खण्डन भी होता था। पौराणिक पण्डित स्वामीजी के व्याख्यानों का आशय हिन्दी में जनता को उलटा ही अपने मत के अनुकूल समझा देते थे। जिससे स्वामी जी के व्याख्यान प्रभावहीन हो जाते थे। इसलिए कलकत्ता के बाबू केशवचन्द्र सेन ने स्वामी जी से हिन्दी भाषा में अपने व्याख्यानों द्वारा प्रचार कार्य करने का निवेदन किया जिसे स्वामी जी ने तुरन्त मान लिया।

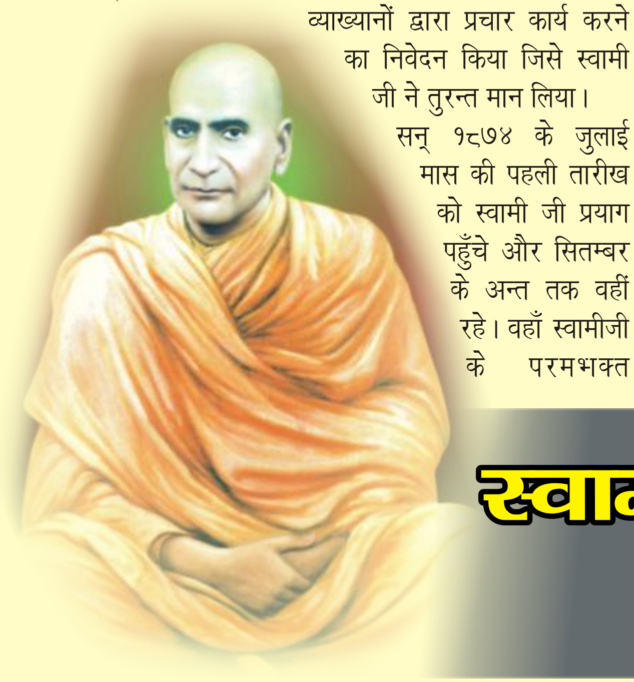

सन् १८७४ के जुलाई मास की पहली तारीख को स्वामी जी प्रयाग पहुँचे और सितम्बर के अन्त तक वहीं रहे। वहाँ स्वामीजी के परमभक्त श्रीराजा जयकृष्णदास जी ने उनसे निवेदन किया कि महाराज यदि आप अपने व्याख्यान (धर्मोपदेश) लिपिबद्ध करवा दें तो उनको छापकर जनता को पढ़ने को मिलें तो उनका स्थायी प्रभाव पड़े और जनता में एक अनुकूल वातावरण बने। स्वामी जी महाराज ने तुरन्त अपने व्याख्यान लिपिबद्ध कराने प्रारम्भ कर दिये। श्री राजा जयकृष्णदास जी के व्यय से यह समूचा प्रबन्ध हुवा। स्वामी दयानन्द जी ने अपने व्याख्यान पण्डितों (पौराणिक ही लिखने वाले थे) को लिखवाये स्वयं नहीं लिखे, जिन्हें पढ़ या सुनकर उनको संशोधित भी नहीं कर पाये और छपते हुये प्रूफ भी स्वयं नहीं देख पाये तथा जिसके लिखने, छपवाने और शोधन करने वाले वे पौराणिक पण्डित थे जो स्वामी जी के कट्टर विरोधी थे क्योंकि स्वामी जी उनकी आजीविका पर ही कुठाराघात करते थे, वही आदिम सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) है। जिसका प्रकाशन सन् १८७५ में काशी के स्टार प्रैस से हुवा।

अतः अब इससे स्पष्ट है कि आदिम सत्यार्थ प्रकाश में कितनी ही बातें स्वामी जी के मन्तव्यों के विरुद्ध लिख दीं और वे छप गईं। उनमें दो बातें विशेषतः उल्लेखनीय हैं, एक तो मृतक श्राद्ध और दूसरी यज्ञों में पशु हिंसा। इसके छपने के बाद भी स्वामी जी महाराज ने नहीं पढ़ा। दो वर्ष बाद सन् १८७७ में ऋषि दयानन्द एक स्थान पर व्याख्यान देते हुये मृतकों के श्राद्ध का खण्डन कर रहे थे कि एक ब्राह्मण हाथ में यह आदिम सत्यार्थप्रकाश (प्रथम संस्करण) लेकर शोर मचाते हुवे बोला 'यहाँ क्या कह रहा है और अपने इस ग्रन्थ में क्या लिखता है, यह अन्धेर है।' तब ऋषि ने उसे अपने पास बुलाया और पुस्तक लेकर देखी तो ऋषि को पता चला कि पौराणिक लेखकों ने कितना घपला और अनर्थ कर रखा है। तब ऋषि ने सन् १८७८ में यजुर्वेद के पहले अंक के भाष्य में इसके विरुद्ध विज्ञापन दिया। किन्तु यज्ञों में पशु हिंसा के विधान का लेख ऋषि के सामने उस समय आया जब वे सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण के लिए संशोधन करने लगे। इन दोनों बातों का विरोधी पौराणिक पण्डितों ने भरपूर दुरुपयोग किया। स्वामी जी पर आरोप लगाया कि स्वामी जी पहले मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशुहिंसा का विधान मानते थे, बाद में अपने मन्तव्य से बदल गये। आर्यसमाज के विद्वान् और नेताओं पर आरोप लगाया कि सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण स्वामीजी का संशोधित नहीं है। स्वामी जी का वास्तविक सत्यार्थप्रकाश तो आदिम सत्यार्थप्रकाश ही है जिसमें मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशु हिंसा का विधान माना है। सत्यार्थप्रकाश का द्वितीय संस्करण तो आर्यसमाजियों ने दयानन्द के निधन के पश्चात् निकाला है जिसमें इन्होंने मृतक श्राद्ध और यज्ञों में पशु हिंसा को निकाल दिया। पौराणिक पण्डितों में इस मुद्दे को उठाने वाले अग्रणी पं. कालूराम शास्त्री जी थे जिन्होंने अपनी मनशा पूरी करने के लिये स्वयं आदिम सत्यार्थप्रकाश पुनः छपवाया। इस विषय पर आर्य विद्वान् नेताओं और पौराणिक पंडितों में घनघोर शास्त्रार्थ लिखित

वेदमार्तण्ड डा. महावीर मीमांसक

सत्यार्थ प्रकाश प्रथम संस्करण के सन्दर्भ में

स्वामी श्रद्धानन्द

और पौराणिक

पं. कालूराम शास्त्री

और मौखिक दोनों प्रकार से चलता रहा। यही प्रसिद्ध प्रसंग है जब हमारे नायक स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज आर्यसमाज के मंच से प्रमुख रूप से आगे आये। यह समय सन् १९१७-१८ का है।

पौराणिक पं. कालूराम जब ऋषि दयानन्द और आर्यसमाज को बदनाम करने की मनशा से आदिम सत्यार्थप्रकाश के उन अंशों को लेकर जो पौराणिक लेखकों ने छल-कपट करके लिखे थे और ऋषि दयानन्द को उनके इस छद्म चाल का पता लगने पर उन अंशों का विज्ञापन देकर खण्डन किया जा चुका था, छपवाना चाहता था। तब यह मुद्दा स्वामी श्रद्धानन्द जी के समक्ष परोपकारिणी सभा के ऋषि मेला पर दीवाली के अवसर पर आया। तब आर्य नेताओं के सामने यह मुद्दा था कि पं. कालूराम की इस बदनीयती से भरी काली करतूत को विफल करने के लिए इस ग्रन्थ (आदिम सत्यार्थप्रकाश) को पुनः छापने से न्यायालय द्वारा रोका जाये। उस समय वहाँ उपस्थित नेताओं ने निर्णय लिया कि यह विषय आर्यप्रतिनिधि सभा संयुक्त प्रान्त को सौंपा जाये, यद्यपि स्वामी श्रद्धानन्द जी इस निर्णय के विरुद्ध थे। पं. कालूराम की पुस्तक छपी और आर्य जगत् में जबरदस्त आन्दोलन प्रारम्भ हो गया। इसके विरोध में आर्य विद्वानों द्वारा बड़े-बड़े लेख लिखे गये। किन्तु स्वामी श्रद्धानन्द जी तब भी अपने निर्णय पर अडिग रहे और कहा कि इसका निराकरण और निदान तो बड़ा सरल था और वह यह कि इन आक्षेपों का युक्तियुक्त उत्तर देकर विरोधियों का मुँह बन्द किया जा सकता था और जनसाधारण में भ्रान्ति फैलने से रोका जा सकता था। परिणामस्वरूप स्वामी श्रद्धानन्द जी ने स्वयं पं. कालूराम के आक्षेपों का लिखित उत्तर दिया जो संक्षेप में निम्न हैः-

क्योंकि पं. कालूराम शास्त्री के आक्षेप मनघड़न्त, कल्पित और जनसाधारण को धोखे और भ्रम में डालने के लिये थे अतः स्वामी जी के इन आक्षेपों को कल्पना कहकर लिखा। उन कल्पित आक्षेपों में पहला आक्षेप था कि कालूराम शास्त्री का दावा था कि मैंने जो प्रथम सत्यार्थप्रकाश छपवाया है वह ऋषि दयानन्द के प्रथम सत्यार्थप्रकाश की हूबहू कापी है, कोई यह नहीं सिद्ध कर सकता कि मैंने इसमें कुछ अपनी ओर से मिलावट करके छपवाया है। कालूराम शास्त्री का यह दावा तो ठीक था क्योंकि वह ज्यों की त्यों प्रथम सत्यार्थप्रकाश की कॉपी थी। किन्तु अगली दलील पं. कालूराम शास्त्री की यह थी कि जब यह ज्यों की त्यों प्रथम सत्यार्थप्रकाश की कॉपी है तो कोई आर्यसमाजी यह सिद्ध करके दिखावे कि प्रथम सत्यार्थप्रकाश की पाण्डुलिपि लिखवाने वाले पौराणिक पण्डितों ने अपनी ओर से मिलावट करके कुछ लिख दिया। यहाँ स्वामी श्रद्धानन्द जी आर्यसमाज की ओर से आगे आये और अकाट्य प्रमाण दिया कि जब ऋषि को यह पता चला कि इस प्रथम सत्यार्थप्रकाश में मृतकों का श्राद्ध करना छपवाया है तब उन्होंने संवत् १९३५ (सन् १८७८) के प्रारम्भ में यजुर्वेद भाष्य प्रथम अंक में विज्ञापन छपवाया कि जो सत्यार्थप्रकाश में मृत पित्रादिकों के श्राद्ध और तर्पण करने के विषय में छपा है सो लिखने और शोधने वालों की भूल से छपवाया गया है।' यज्ञ में पशुहिंसा का पता ऋषि को बाद में चला जिसका निराकरण

सत्यार्थप्रकाश के द्वितीय संस्करण में किया गया।

पं. कालूराम शास्त्री का दूसरा काल्पनिक आक्षेप था कि चाहे आज के आर्यसमाजी प्रथम सत्यार्थप्रकाश को मानें या न मानें, परन्तु स्वामी दयानन्द इसे मानते थे अतः इसमें लिखी सबकी सब बातें स्वामी जी के मन्तव्य हैं। स्वामी श्रद्धानन्दजी ने इसका भी अकाट्य उत्तर दिया कि प्रथम सत्यार्थप्रकाश में स्वामीजी के मन्तव्यों के विरुद्ध छपवा दिया गया इसीलिए तो स्वामी जी ने स्वयं उसमें संशोधन करके द्वितीय सत्यार्थप्रकाश छपवाया और उसकी भूमिका में जो शब्द लिखे वे ध्यान देने योग्य हैं। 'जो छपने में कहीं भूल रही थी वह निकाल शोध कर ठीक-ठीक कर दी गई है।'

पं. कालूराम जी का अगला काल्पनिक आक्षेप था कि प्रथम सत्यार्थप्रकाश के लिखवाये से लेकर छपवाने तक का व्यय आदि से प्रबन्ध और व्यवस्था करने वाले श्री राजा जयकृष्ण दास पौराणिक थे अतः उन्होंने स्वामीजी के पौराणिक मन्तव्यों को जनता के समक्ष लाने के लिए इसे छपवाया। तथा स्वामी दयानन्द प्रथम सत्यार्थप्रकाश के छपने तक और कुछ वर्ष बाद तक भी पौराणिक मन्तव्यों मृतक पितृश्राद्ध और यज्ञ में पशुहिंसा आदि के समर्थक रहे किन्तु बाद में बदल गये। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने इसका भी मुँहतोड़ उत्तर दिया और आन्तरिक तथा बाह्य प्रमाणों से सिद्ध किया कि श्री राजा जयकृष्ण दास ऋषि दयानन्द के अनन्य भक्त और पक्के आर्यसमाजी थे। ऋषि दयानन्द के अनेक प्रवचनों और लेखों से जो गुरु विरजानन्द जी से दीक्षा लेने के बाद निरन्तर देते रहे, लिखित प्रमाण देकर सिद्ध किया कि स्वामी जी के मन्तव्य आदि से अन्त तक अपरिवर्तित रहे कभी नहीं बदले।

पं. कालूराम जी का अन्तिम आक्षेप, जब वे स्वामी श्रद्धानन्द

जी के सभी तर्क और युक्तिपूर्ण प्रमाणों से निरुत्तर हो गये, तो यह था कि आर्यसमाजियों ने स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद स्वामी दयानन्द के पौराणिक मन्तव्यों को बदलकर द्वितीय सत्यार्थप्रकाश छपवाया जिसकी भूमिका स्वामी दयानन्द के देहान्त के बाद सं. १९४१ में लिखी गई।

स्वामी श्रद्धानन्द जी महाराज ने कालूराम के इस काले झूठ की पोल खोल कर उसका मुँह काला कर दिया। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने सप्रमाण ब्योरा देकर सिद्ध किया, लिखा कि द्वितीय सत्यार्थप्रकाश के संशोधन का कार्य संवत् १९३८ (सन् १८८०) में ही ऋषि दयानन्द ने करना आरम्भ कर दिया था। द्वितीय सत्यार्थप्रकाश का सारा संशोधन सं. १९३८ के भाद्रमास तक (ऋषि के निर्वाण से १४ मास पूर्व तक) हो चुका था। उन दिनों ऋषि दयानन्द उदयपुर में थे। श्रावण कृष्ण १० से लेकर फाल्गुन कृष्ण ७ सं.१९३८ तक ऋषि उदयपुर में रहे। स्वामी श्रद्धानन्द जी ने चारण नवलदास के द्वारा लिखित कथन के आधार पर प्रामाणिक रूप से सिद्ध किया कि ऋषि के जीवित रहते हुवे ही द्वितीय सत्यार्थप्रकाश की न केवल भूमिका ही अपितु ३६४ पृष्ठ (ग्यारहवाँ समुल्लास) तक छप चुके थे। चारण नवलदास का वह लिखित कथन देकर हम लेख को विराम देंगे।

'मैंने स्वामीजी से नया सत्यार्थप्रकाश जो उस वक्त ३६४ सफे तक छप चुका था, ठाकुर गिरधारी सिंह रईस के वास्ते खरीदा था।' इसके बाद पौराणिक पं. कालूराम जी शास्त्री की बोलती बन्द हो गई। लगभग १०० वर्ष पहले का यह युग आर्यसमाज के संघर्ष का समय था जिसमें स्वामी श्रद्धानन्द जी ने ऋषि दयानन्द, वेद, आर्यसमाज और आर्यसमाजियों के लिये जी जान से संघर्ष किया। ऐसे विवेकशील समर्पित, सर्वस्वत्यागी, जुझारू और विद्वान् उद्भट संन्यासी नेता की आज बड़ी आवश्यकता है ताकि आर्यसमाज पुनः अपने उत्कर्ष पर पहुँचे।

डॉ. महावीर मीमांसक
ए-३/११, पश्चिम विहार, दिल्ली-११००६३

लेखक के विचारों से अक्षरशः सहमत होना सम्पादक के लिए आवश्यक नहीं है।

अनेक विशेषताओं से युक्त १८८४ के मूल सत्यार्थप्रकाश के सर्वाधिक नजदीक, तत्कालीन शैली का संरक्षण, मुद्रण अशुद्धियों से रहित

सत्यार्थप्रकाश

अवश्य खरीदें।

अब मात्र आधी कीमत में ₹ ४०

घाटे की पूर्ति पूर्ववत् दानदाताओं के सहयोग से ही संभव होगी। आशा ही नहीं पूर्ण विश्वास है कि सत्यार्थप्रकाश प्रेमी इस कार्य में आगे आवेंगे।

३५०० रु. सैंकड़ा शीघ्र मंगवाएँ

श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, नवलखा महल, गुलाबबाग, उदयपुर - ३१३००१

सत्यार्थप्रकाश पहेली- ३/१६

सत्यार्थ सौरभ सदस्य संख्या-

रिक्त स्थान भरिये- सत्यार्थप्रकाश जैसे महान् ग्रन्थ का स्वाध्याय कीजिए। (तृतीय समुल्लास पर आधारित)- पुरस्कार प्राप्त करिये

१	द्या	१	श १	■	शू २		■	म ३		■
■	४	द	■	५ दे		५	र		५ ग्रा	५
६	नु	६	द ६	■	■	७	व ७		७ र	■

संकेत (बाएँ से दाएँ) ऊपर से नीचे न भरें।

१. किस कोश को चोर व दायभागी नहीं ले सकते?
२. जिसे पढ़ने-पढ़ाने से कुछ भी न आए वह मूर्ख होने से क्या कहाता है?
३. श्रौत सूत्रादि के अनुसार स्त्री यज्ञ में क्या पढ़े?
४. परमात्मा ने सबके लिए क्या प्रकाशित किए हैं?
५. पुरुष विद्वान् और स्त्री अविदुषी हो अथवा स्त्री विदुषी और पुरुष अविद्वान् हो तो घर में नित्यप्रति क्या हो?
६. आर्यावर्त्त के राजपुरुषों की स्त्रियाँ क्या जानती थीं?
७. वैश्या को कौन-सी विद्या आवश्यक है?

सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १/१६ का सही उत्तर

१. पाँच २. नित्य ३. दश ४. वेदाधीन
५. ईश्वरकृत ६. आर्षग्रन्थ ७. सब सत्य

"विस्तृत नियम पृष्ठ ३० पर पढ़ें एवं ₹५१०० पुरस्कार प्राप्त करें।"

कार्यालय में हल की हुई पहेली प्राप्त करने की अन्तिम तिथि- १५ अप्रैल २०१६

जीवन में यज्ञों का महत्व

विश्वेन्द्रार्य

आदर्श गृहस्थों के द्वारा ही आदर्श परिवारों का निर्माण किया जाता है। जिन परिवारों के अन्दर यज्ञीय भावना होती है वे ही आदर्श परिवार कहलाने के अधिकारी होते हैं। यज्ञीय भावना का आशय है- यज्ञ की भावना, और यज्ञ की भावना का मुख्य आशय है स्वार्थ का त्याग और परोपकार का ग्रहण। जहाँ पर ये भावना है वे परिवार निरन्तर उन्नति के पथ पर अग्रसर हुआ करते हैं। इस यज्ञीय भावना का विकास करने के लिए परमेश्वर ने सृष्टि के आदिकाल में मानव की उत्पत्ति के साथ ही यज्ञ की भी उत्पत्ति की। परमेश्वर[1] की आज्ञा है-

प्राञ्चं यज्ञं प्र णयता सखायः। - ऋग्वेद १०/१०१/२

इस पावन प्रेरक यज्ञ को सभी जन मिलकर किया करें। बिना यज्ञ के उत्तम परिवारों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। इसलिए हमारे परिवार भी ऐसे हों जहाँ पर (**यज्ञं दुहादम्**) नित्य यज्ञ होते रहें। यज्ञों के द्वारा ही हमारे परिवार अत्यन्त मनोहर, धन-धान्य से परिपूर्ण, हितकारी और रमणीय बनते हैं।[2]

वैदिक संस्कृति के अनुसार यज्ञ हमारे परिवारों को सुख-समृद्धि, आयु, अरोग्यतादि प्रदान करने वाले हैं। ऋग्वेद के अनुसार-

उप क्षरन्ति सिन्धवो मयोभुव ईजानं च यक्ष्यमानं च धेनवः।
पृणन्तं च पपुरिं च श्रवस्यवो घृतस्य धारा उप यन्ति विश्वतः।।
- ऋ. १/१२५/४

अर्थात् यज्ञ करने वाले और यज्ञ की इच्छा करने वाले को गायें व सुख-शांति इस प्रकार होते हैं जिस प्रकार नदियाँ स्वयमेव समुद्र में जा गिरती हैं। इतना ही नहीं अपितु उसे पालन करने की शक्ति, अन्न और यश, पुष्टि जल की धाराओं के समान चारों ओर से प्राप्त होते हैं।

यज्ञं तपः (तै.आ.१०/८/१) यज्ञ एक प्रकार का तप है। अतः प्रत्येक परिवार में यज्ञों का अनुष्ठान अवश्य ही होना चाहिए।

यज्ञ शब्द अत्यन्त व्यापक अर्थों वाला है। संक्षेप में यदि कहना हो तो कह सकते हैं कि लोकोपकार के लिए किए जाने वाले सभी शुभ कार्य यज्ञ हैं। सकाम, निष्काम, नित्य, नैमित्तिक सभी कर्म यदि मन और हृदय को पवित्र करते हैं तो वे सार्थक हैं और यज्ञ हैं। यज्ञ शब्द 'यज्' धातु से बना है जिसका अर्थ वैयाकरणों और नैरुक्त आचार्यों के अनुसार देव पूजा, संगतिकरण और दान है।

देवपूजा- जिन कार्यों में देवों की पूजा अर्थात् जो विद्या, ज्ञान और धर्म के सेवन से वृद्ध, दिव्य गुणों से युक्त महान् तेजस्वी, अपने ज्ञान-विज्ञान के द्वारा संसार का उपकार करने वाले महान् विद्वान् इस लोक और परलोक के सुख के लिए सर्वत्र विद्या ज्ञान और धर्म का सदा उपदेश करने वाले हैं उनका मान-सम्मान सेवा-सत्कार आदि करना तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्वों का यथायोग्य गुण संवर्धन करना।

संगतिकरण- अर्थात् विद्वानों, महात्मा पुरुषों का संग, परब्रह्म के साथ आत्मा का संयोग वा प्राप्ति तथा अग्नि, वायु, जल आदि प्राकृतिक तत्वों के साथ यथायोग्य संगति- जिससे अनेकविध शिल्पकार्यों की सिद्धि होती है।

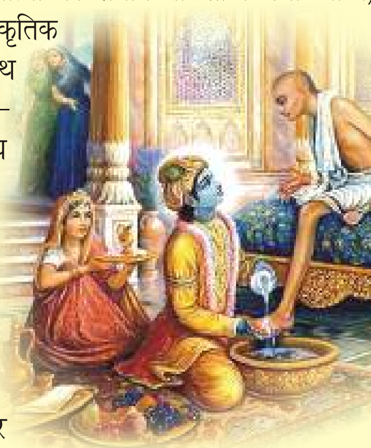

दान- संसार के प्राणियों के लाभ वा उत्कर्ष के लिए शुभ गुण, विद्या, सुख, सत्यधर्म और धन आदि का नित्य दान करना तथा जल, वायु आदि प्राकृतिक तत्वों की शुद्धि वा गुण संवर्धन के लिए अग्निहोत्र में घृतादि पदार्थों का प्रक्षेप किया जाना। जिन कार्यों में विश्व कल्याणार्थ उक्त देवपूजा, संगतिकरण और दान किया जाता है, सब यज्ञ शब्द से ग्रहण किए जाते हैं। ऋषिवर दयानन्द सरस्वती ने भी यजुर्वेद के प्रथम अध्याय के द्वितीय मंत्र के

भाष्य में भी यज्ञ शब्द का यही तात्पर्य लिखा है।[3]

वैदिक संस्कृति में यज्ञों का संसार अत्यन्त विस्तृत है जिसे महर्षि देव दयानन्द ने अपने ग्रन्थों में सर्वत्र अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेध पर्यन्त शब्दावली से सूचित किया है। इन अश्वमेधादि यज्ञों के इस विस्तृत वितान को यदि उपसंहृत करना हो तो पञ्चमहायज्ञों के रूप में उपसंहृत कर सकते हैं। प्राचीन ऋषि महर्षियों ने इन पञ्चमहायज्ञों के महत्व को अश्वमेधादि यज्ञों से भी बढ़कर बताया है और इन्हें महायज्ञ के नाम से गौरवान्वित किया है। समय और द्रव्य की दृष्टि से अश्वमेधादि यज्ञ चाहे कितने ही विशाल या बड़े क्यों न हों लेकिन महत्व की दृष्टि से पञ्चमहायज्ञ इनसे बढ़कर ही हैं। गृहस्थ स्त्री-पुरुष अश्वमेधादि यज्ञों को करें अथवा न करें किन्तु पञ्चमहायज्ञों का करना अत्यन्त अनिवार्य कर्म है। कुछ लोगों की मान्यता है कि हम तो अनेक प्रकार के दान-पुण्य परोपकार, दीन दुःखियों की सेवा, गौ-सेवा आदि कार्य करते रहते हैं, यही हमारे यज्ञ और महायज्ञ हैं। तो निवेदन है कि ये सभी परोपकार के कर्म यज्ञ तो हैं लेकिन ये पञ्चमहायज्ञों का स्थान कदापि नहीं ले सकते हैं और न ही पञ्चमहायज्ञों के न करने से होने वाली हानि और पाप की पूर्ति कर सकते हैं। जैसे किसी को बुखार आया है वह सोचे मेरे पास खाँसी की दवा है उसे खाने से बुखार उतर जायेगा। अथवा किसी को प्यास लगी है वह सोचे मेरे पास भोजन है उसे खाने से प्यास बुझ जाये तो यह असंभव है। जिस प्रकार बुखार के लिए बुखार की दवा, प्यास के लिए पानी की आवश्यकता होती है उसी प्रकार सेवा के स्थान पर सेवा, दान के स्थान पर दान और पञ्चमहायज्ञों के स्थान पर पञ्चमहायज्ञ आवश्यक हैं। इसीलिए महर्षि मनु **'पञ्चैतान्यो महायज्ञान्न हापयेति शक्तितः'** - मनु ३/७१ का उद्घोष करते हुए किसी भी गृहस्थ को इन पञ्चमहायज्ञों के करने में प्रमाद न करने की आज्ञा प्रदान करते हैं।

ये पञ्चमहायज्ञ भौतिक तथा परमार्थिक दोनों मार्गों के सेतु और सुख के आधार हैं अतः प्रत्येक मानव इन पञ्चमहायज्ञों को करते हुए परमेश्वर की कृपा, आनन्द और समस्त ऐश्वर्यों को प्राप्त करने में समर्थ हो जाता है। **'महायज्ञैश्च यज्ञैश्च ब्राह्मीयं क्रियते तनुः'** - मनु २/२८ इन पञ्चमहायज्ञों तथा सोमयागों का अनुष्ठान करने वाला मनुष्य ब्रह्म प्राप्ति के योग्य हो जाता है।

ये पञ्चमहायज्ञ हमारी समस्त उन्नतियों के प्रतीक हैं। ब्रह्मयज्ञ- हमारी आत्मिक उन्नति, देवयज्ञ- पारिवारिक व सामुदायिक उन्नति, पितृयज्ञ- सामाजिक उन्नति अतिथि यज्ञ- राष्ट्रीय उन्नति तथा बलिवैश्वदेव यज्ञ- सम्पूर्ण विश्व की उन्नति का प्रतीक है। इस प्रकार ये पाँचों महायज्ञ हमारी सभी प्रकार की उन्नतियों के प्रतीक और कल्याण के साधन हैं। यही कारण है कि वैदिक धर्मियों के यहाँ इन यज्ञों का प्रचलन चिरकाल से है और ये उनकी दिनचर्या के अत्यन्त महत्वपूर्ण अंग बने हुए हैं।

पाद टिप्पणी-

१. सहयज्ञाः प्रजाः सृष्ट्वा पुरोवाच प्रजापतिः। गीता ३/१८

२. होतृषदनं हरितं हिरण्ययं। अथर्व ११/९९/१

३. धात्वशदि यज्ञस्त्रिधाभवति- १. विद्या ज्ञान धर्मानुष्ठानं वृद्धानां विदुषाम् ऐहिक पारमार्थिक सुखसम्पादनाय सत्करणम् २. सम्यक् पदार्थ गुणसंमेलविरोधज्ञानसंगत्या शिल्पविद्या प्रत्यक्षीकरणम्, नित्यं विद्वत्समागमानुष्ठानम् ३. विद्या सुख धर्मादिशुभ गुणानां नित्यं दानकरणमिति- यजुर्वेद भाष्य अ. १, मं.२ (महर्षि दयानन्द सरस्वती) (आदर्श परिवारों के आदर्श कर्तव्यों कर्म से)

वैदिक ज्ञान विज्ञान संस्थान
बी-४११ प्रतीक एन्कलेव, कमलानगर, आगरा-५
दूरभाष ०९७१९१५४६१५

आर्य आक्रमण सिद्धान्त —भ्रम की चरम स्थिति

–गुंजन अग्रवाल

वैचारिकी अंक ३१.१ (जनवरी-फरवरी २०१५) में प्रकाशित डॉ. भ्रमरलाल जोशी का लेख 'ऋग्वेद एक परिचय' पढ़ा। डॉ. भ्रमरलाल जोशी ने अपने लेख में जिन विचारों का प्रतिपादन किया है, वे भारतीय संस्कृति पर केवल कुठाराघात ही नहीं करते, अपितु वे भारत विरोधी भी हैं।

डॉ. भ्रमरलाल जोशी ने अपने लेख का प्रारम्भ आर्य आगमन सिद्धान्त से किया है जो अत्यन्त आश्चर्यजनक, भ्रामक और हास्यास्पद भी है। जोशी जी लिखते हैं- साढ़े छः हजार वर्ष पहले मध्य एशिया के किरगिजस्तान के मैदान में रहने वाले आर्य जीवन की सुविधा की शोध में.... निकले। उनमें से कई यूरोप, कई ईरान और कई भारत के सिन्ध पंजाब में आकर बस गए। (वैचारिकी पृ.५ एवं १२)

यह एक भ्रांति ही है कि आर्य (हिन्दू) भारत में कहीं बाहर (विदेश) से आए हैं। प्रख्यात् भारतविद् प्रो. सूर्यकान्त बाली ने अपने ग्रन्थ 'भारत गाथा' में इस सम्बन्ध में महत्वपूर्ण बातें लिखी हैं जिनका मैं अक्षरशः उल्लेख कर रहा हूँ।

'भारतीय शैली के इतिहास की स्मृति में मनु तो हैं, जिन्होंने मानव जाति को मानव बनाया। हमारी स्मृति में प्रलय भी है जिससे मनु ने हमारी जाति को उबारा। हमारी स्मृति में पृथु भी हैं जिनके नाम पर इस धरती का नाम पृथिवी पड़ा।

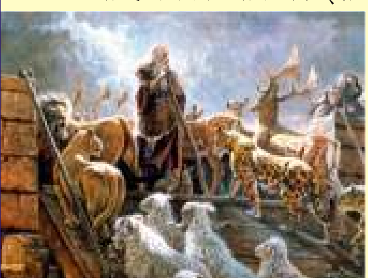

हमारी स्मृति में प्रथम जैन-तीर्थंकर ऋषभदेव के पुत्र भरत भी हैं, जिनके नाम पर इस देश का नाम भारतवर्ष पड़ा। हमारे जेहन में इतनी सारी स्मृतियाँ हैं। परन्तु हम किसी और देश से, बाहर से अपने देश भारतवर्ष में आये- यह हमारी स्मृति में कहीं नहीं है। हमारी स्मृति में देव भी हैं। हमारी स्मृति में असुर भी हैं। हमारी स्मृति में यक्ष भी हैं, किन्नर भी हैं और गन्धर्व भी हैं। परन्तु हमारी स्मृति में वे आर्य नहीं हैं जिन्हें कहीं बाहर से यहाँ आक्रमणकारी रूप में आया बताया जा रहा है। हमारी स्मृति में श्रेष्ठ के अर्थ में 'आर्य' शब्द भी है। दुराचारी के अर्थ में अनार्य शब्द भी है। हमारी स्मृति में 'पति' अर्थ देनेवाला आर्य शब्द भी है, पर जातिवाची, नस्लवाची 'आर्य' शब्द हमारी स्मृति में कहीं नहीं। जिस तरह से आर्य हमारे पूर्वज और कहीं बाहर से आये हुए बताए जा रहे हैं, वेद हों या ब्राह्मण ग्रन्थ हों, आरण्यक ग्रन्थ हों या उपनिषद् ग्रन्थ हों, रामायण और महाभारत जैसे प्रबन्धकाव्य (इतिहास ग्रन्थ) हों या अठारह पुराण और अठारह उपपुराण हों, तमाम वैज्ञानिक साहित्य हो, समाजशास्त्रीय ग्रन्थ हों या ललित साहित्य हो, संस्कृति के ऐसे किसी भी ग्रन्थ में कोई एक परोक्ष, प्रत्यक्ष की तो बात ही क्या है, संदर्भ तक ऐसा नहीं जो हमारे बारे में कहता हो कि हम बाहर से आये। ब्राह्मण परम्परा के तमाम ग्रन्थ हों या श्रमण अर्थात् जैन बौद्ध परम्परा के कोई गन्थ हों, ऐसी कोई स्मृति कहीं अंकित नहीं, जो हमारे बारे में कहती हो कि हम बाहर से आये। भारत का पाली, प्राकृत, अपभ्रंश या आधुनिक भारतीय भाषाओं में लिखा साहित्य हो, हमारे देश के किसी भी कोने में गाया जानेवाला कोई लोकगीत हो, कोई झूठी सच्ची अफवाह, कोरी गप्प या कोई बकवास हो, कहीं भी यह अंकित नहीं कि यह देश हमारा नहीं और हम कहीं बाहर से आये हैं।'(भारत गाथा)।

वस्तुतः जब संस्कृत और यूरोप की मुख्य भाषाओं में समानताएँ उजागर होनी शुरू हुईं, तब औपनिवेशिक काल के पाश्चात्य प्राच्यविदों द्वारा आर्य आक्रमण सिद्धान्त की स्थापना की गई और इस पर इतनी चर्चा चलाई कि स्वामी दयानन्द सरस्वती और लोकमान्य तिलक जैसे बड़े-बड़े राष्ट्रवादी विद्वान् भी आर्यों (हिन्दुओं) के मूलस्थान के विषय

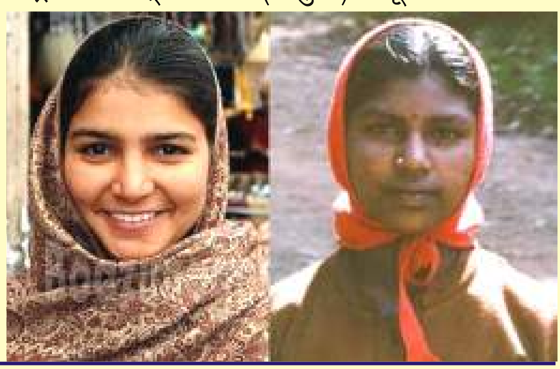

में भ्रमित हो गए।

(आर्यों के मूल निवास के सम्बन्ध में लेखक लोकमान्य तिलक के संदर्भ में तो सही हैं परन्तु स्वामी दयानन्द के बारे में गलत हैं। लगता है लेखक ने दयानन्द वाङ्मय को ठीक से नहीं पढ़ा। स्वामीजी के सर्वप्रसिद्ध सत्यार्थप्रकाश से ही यह आईने की तरह स्पष्ट है कि वे भारत में 'आर्यों' से पूर्व किसी मानव का अस्तित्व नहीं स्वीकारते। वे त्रिविष्टप में 'आदिमानव' की उत्पत्ति के साथ ही भारतीय भू-भाग को आर्यों के द्वारा बसाना मानते हैं। सत्यार्थप्रकाश के अष्टम समुल्लास के निम्न दो अवतरण पठणीय हैं-

१. 'यह आर्य्यावर्त्त देव अर्थात् विद्वानों ने बसाया और आर्यजनों के निवास करने से आर्य्यावर्त्त कहाया है। (प्रश्न) प्रथम इस देश का नाम क्या था, और इसमें कौन बसते थे? (उत्तर) इस के पूर्व इस देश का नाम कोई भी नहीं था और न कोई आर्य्यों के पूर्व इस देश में बसते थे। क्योंकि आर्य लोग सृष्टि की आदि में कुछ काल के पश्चात् तिब्बत से सूधे इसी देश में आकर बसे थे। (प्रश्न) कोई कहते हैं कि ये लोग ईरान से आये, इसी से इन लोगों का नाम आर्य्य हुआ है। इन के पूर्व यहाँ जंगली लोग बसते थे कि जिन को असुर और राक्षस कहते थे। आर्यलोग अपने को देवता बतलाते थे और उन का जब संग्राम हुआ, उस का नाम देवाऽसुर संग्राम कथाओं में ठहराया। (उत्तर) यह बात सर्वथा झूठ है।' (स.प्र.पृ.२२४-२२५)

२. 'किसी संस्कृत ग्रन्थ में वा इतिहास में नहीं लिखा कि आर्य्य लोग ईरान से आये और यहाँ के जंगलियों को लड़कर, जय पा के, निकाल के, इस देश के राजा हुए। पुनः विदेशियों का लेख माननीय कैसे हो सकता है? (स.प्र.पृ. २२५)

- संपादक

भारत पर अपने शासन को न्यायसंगत सिद्ध करने के लिए अंग्रेजों ने हिन्दुओं को ही विदेशी घोषित कर दिया।

इसके अतिरिक्त अंग्रेज इसके द्वारा उत्तर भारतीयों (तथाकथित आर्यों) और दक्षिण भारतीयों (तथाकथित द्रविड़ों) में फूट डालना चाहते थे। दुर्भाग्य की बात है कि स्वाधीनता के बाद भी राष्ट्र इस जहर से मुक्त नहीं हो सका और देश पर बेताल की तरह चिपके मार्क्सवादी इतिहासकार इसे इतिहास की पाठ्य पुस्तकों में घसीटते रहे। परन्तु शनैः शनैः इस तथ्य पर से पर्दा उठता गया कि यूरोपीय विद्वानों के एक वर्ग ने ब्रिटिश शासन से समर्थन पाकर भारत के इतिहास को विकृत करने और हिन्दुओं को सदा सर्वदा के लिए दास बनाए रखने के लिए आर्य आगमन/आक्रमण सिद्धान्त की कूटनीतिक चाल चली थी।

अब आर्य आगमन/आक्रमण सिद्धान्त करीब-करीब पूरे संसार में अमान्य हो गया है। सैंकड़ों भारतीय व यूरोपीय विद्वान् इस सिद्धान्त के विरोध में खड़े हो गए हैं। जो विद्वान् पहले इसके पक्ष में खड़े थे, वे भी अब इसका विरोध करने लगे हैं। सर्वश्री डेविड फ्राउले, स्टीफन नेप, मिशेल डेनिनो, सुभाष काक, नवरत्न एस. राजाराम, रामस्वरूप, सीताराम गोयल, स्वराज्य प्रकाश गुप्त, अरुण शौरी, विष्णु श्रीधर वाकणकर, राम साठे, रायकृष्ण दास, वासुदेवशरण अग्रवाल, बाबा साहिब आपटे, वी. एस.नायपॉल, एस. आर. राव, रामविलास शर्मा, भगवान सिंह, शिवाजी सिंह, ठाकुर प्रसाद वर्मा, सतीश चन्द्र मित्तल जैसे सैंकड़ों इतिहासकार और वैदिक विद्वान् आर्य आगमन/आक्रमण सिद्धान्त को स्पष्ट रूप से भारतवर्ष पर जबरन थोपा हुआ और ब्रिटिशकालीन यूरोपीय प्राच्यविदों की भारतविरोधी दुरभिसन्धि का परिणाम मानते हैं।

दूसरी ओर विज्ञान की खोज ने भी आर्य आक्रमण सिद्धान्त को पूर्णतः नकार दिया है। सच यह है कि आर्य आक्रमण नाम की चीज न तो भारतीय इतिहास के किसी कालखण्ड में घटित हुई और न ही आर्य तथा द्रविड़ नाम की दो पृथक् मानव नस्लों का अस्तित्व ही कभी धरती पर रहा है। इतिहास और विज्ञान के मेल के आधार पर हुआ यह क्रान्तिकारी जैव रासायनिक डी.एन.ए. गुणसूत्र आधारित अनुसंधान फिनलैण्ड के तारतू विश्वविद्यालय एस्ओनियन में हाल ही में सम्पन्न हुआ है। कैम्ब्रिज विश्वविद्यालय के प्रो. की.वी. सील्ड के निर्देशन में एस्ओनिया स्थित एस्ओनियन बायोसेंटर, तारतू विश्वविद्यालय के शोध छात्र ज्ञानेश्वर चौबे ने अपने अनुसंधान में यह सिद्ध किया है कि सारे भारतवासी जीन अर्थात् गुणसूत्रों के आधार पर एक ही पूर्वज की सन्तानें हैं, आर्य और द्रविड़ का कोई भेद गुणसूत्र के आधार पर नहीं मिलता है। और तो और जो आनुवांशिक गुणसूत्र भारतवासियों में पाए जाते हैं वे डी. एन.ए. गुणसूत्र दुनिया के किसी अन्य देश में नहीं पाए गए। शोधकार्य में अखण्डभारत अर्थात् वर्तमान भारत, पाकिस्तान, बांग्लादेश , श्रीलंका और नेपाल की जनसंख्या में विद्यमान लगभग सभी जातियों, उपजातियों, जनजातियों के लगभग १३००० नमूनों के परीक्षण परिणामों का इस्तेमाल किया गया। इनके नमूनों के परीक्षण से प्राप्त परिणामों की तुलना मध्य एशिया, यूरोप और चीन, जापान आदि देशों में रहने वाली मानव नस्लों के गुणसूत्रों से की गई। इस तुलना में पाया गया कि सभी भारतीय चाहे वे किसी भी धर्म को मानने वाले हैं ९९ प्रतिशत समान पूर्वजों की सन्तानें हैं। भारतीय पूर्वजों का डी.एन.ए. गुणसूत्र यूरोप, मध्य एशिया और चीन, जापान आदि देशों के नस्लों में सर्वथा भिन्न है और इस भिन्नता को स्पष्ट पहचाना जा सकता है।

डॉ. भ्रमरलाल जोशी की स्थापनाः भारत में आए आर्यों में कई कवि थे। उन्होंने सिन्ध पंजाब की भारत की प्रकृति के उर्वर हरे-भरे रम्य स्वरूप को देखकर आह्लाद में आकर ऋचाएँ गाईं। उनकी ऋचाओं का संग्रह ही ऋग्वेद है। (पृ. ५ एवं १२)।

इसका अभिप्राय यह हुआ कि भेड़ बकरी चराने वालों का बौद्धिक स्तर इतना उच्च कोटि का था कि उन्होंने उन ग्रन्थों की रचना की जिन पर हिन्दू धर्म अवलम्बित है और जिन्हें हिन्दू धर्म के सभी सम्प्रदाय प्रमाण मानते हैं अथवा वेद अत्यन्त निम्नस्तरीय ग्रन्थ हैं जिनमें भेड़ बकरी चराने वालों की रचनाएँ संगृहीत हैं। उपर्युक्त दोनों ही बात न तो संभव हैं और न ही सत्य हैं, अतः मुझे साहित्य महोपाध्याय डॉ. भ्रमरलाल जोशी के कथन पर हँसी आती है।

जोशी जी लिखते हैं : वेदों के आधुनिक कालीन उद्धारक, गुणग्राही एकमात्र पश्चिम के देश हैं। इन्होंने वेदों की एवं

प्राच्यविद्या की हस्तलिखित प्रतियाँ प्राप्त करके बड़े ही विद्याश्रम से उनका सम्पादन एवं मुद्रण किया। भारत के सभी वेद एवं प्राच्यविद्या के ग्रन्थों का प्रथम मुद्रण सम्पादन पश्चिम के देशों में ही सम्पन्न हुआ। यदि ऐसा न हुआ होता तो वेद एवं प्राच्य विद्या की यह अमूल्य विद्या सम्पत्ति भारत में दीमक का आहार बन जाती, सड़ जाती।

आज संसार में जितना ज्ञान विज्ञान का आलोक है, उसका अधिकांश श्रेय यूरोप के आर्यज्ञानियों एवं वैज्ञानिकों को ही है। (पृ. १०).....भारतीय वैदिक व्याख्याताओं की इस त्रुटि को जानकर रॉथ ने सगर्व कहा- एक प्रशिक्षित यूरोपवासी ऋग्वेद के वास्तविक अर्थ तक पहुँचने में किसी भी ब्राह्मण भाष्यकार से अधिक समर्थ है क्योंकि उसका बौद्धिक क्षितिज पर्याप्त विकसित है। (पृ. ११)

डॉ. भ्रमर लाल जोशी ने मैक्समूलर का नाम बड़े गर्व से लिया है। मैक्समूलर पर उनके अध्यापकत्व की छाप तो थी ही, इसके अतिरिक्त २८ दिसम्बर १८५५ ई. के दिन लॉर्ड मैकाले के साथ उनकी भेंट ने भी उनके भारत विरोधी विचारों को उभाड़ने में बड़ा भारी काम किया है। मैक्समूलर के विचार उनके निम्नलिखित वचनों से जाने जा सकते हैं -

(क) इतिहास ऐसी शिक्षा देता हुआ प्रतीत होता है कि सम्पूर्ण मानव जाति को धीरे-धीरे शिक्षित होना आवश्यक है ताकि समय पाकर वह ईसाई धर्म की सच्चाई को हृदयंगम कर सके। बौद्ध धर्म आर्य जगत् की सीमाओं से कई दूर तक फैल चुका है किन्तु उस नियन्ता की दृष्टि में, जिसके लिए हजारों वर्ष का समय एक दिवस के समान है, विश्व के पुराने धर्मों की तरह बौद्ध धर्म ने भी अपनी भूलों द्वारा ईश्वर की सच्चाई को जानने के लिए मानव हृदय की अमिट भूख को बढ़ाकर एवं पुष्ट करके ईसा के लिए मार्ग प्रशस्त करने का ही काम किया है। (History of Ancient Sanskrit Literature, p.32, 1860)।

(ख) वैदिक सूक्तों की एक बड़ी संख्या बालकों जैसी अत्यन्त मूर्खतापूर्ण है, साथ ही जटिल, निम्नकोटि की और साधारण है। (Chips from a German workshop, second edition 1866 p.27)।

(ग) इतना ही नहीं, उन वेदों में साधारण, स्वाभाविक और बालकोचित विचारों के साथ-साथ बहुत सी ऐसी बातें हैं जो हमारे आधुनिक अथवा दूसरी श्रेणी की एवं तृतीय श्रेणी की सी लगती है। (India what can it teach us, Lecture IV p 118.1882)

मैक्सूमलर ने सन् १८६६ के एक पत्र में अपनी पत्नी को लिखा था वेद के अनुवाद का मेरा यह संस्करण उत्तर काल में भारत के भाग्य पर पर्याप्त प्रभाव डालेगा। यह उनके धर्म का मूल है। मैं निश्चयपूर्वक अनुभव करता हूं कि गत तीन हजार वर्षों से वेदों से उद्भूत सब कुछ का उन्मूलन करने का एकमात्र उपाय है कि उन्हें उनके धर्म का मूल कैसा है- यह बताया जाये। (List Life and Letters of Right Honorable Friedrich Max Muller Vo---- I Ch XV p 346)

एक दूसरे पत्र में वे अपने पुत्र को लिखते हैं- 'क्या तुम बताओगे कि वह कौनसी पवित्र पुस्तक है जो संसार की अन्य सभी पुस्तकों से श्रेष्ठ है? मैं कहता हूँ कि न्यू टेस्टामेन्ट ही ऐसा ग्रन्थ है। इसके पश्चात् मैं कुरआन को स्थान देता हूँ जो नैतिक शिक्षा में टेस्टामेन्ट के रूपान्तर से अधिक कुछ नहीं है। इसके पश्चात् मेरे मत के अनुसार क्रमशः 'ओल्ड टेस्टामेन्ट', 'दक्षिणीय बौद्ध त्रिपिटक', दी टाओटे किंग ऑफ लाओट्जे', दि किंग ऑफ कन्फ्यूसियस', 'वेद' और 'अवेस्ता' हैं।' (The Life and Letters of Right Honorable Friedrich Max Muller, Vol. II, Ch. XXXII, p.322.)

१६ दिसम्बर सन् १८६८ के दिन भारत सचिव ड्यूक ऑफ आर्गाइल को वे एक पत्र में लिखते हैं- 'भारत का प्रचीन धर्म नष्टप्राय है, और यदि ईसाई-धर्म उसका स्थान नहीं लेता तो यह किसका दोष होगा? (Ibid, Vol.1, Ch. XVI, p. 378)।

मैक्समूलर तो इतने निर्भीक हो गए थे कि उन्होंने भारतीयों पर खूब रोब गांठना आरम्भ कर दिया था जैसा कि उनके द्वारा ब्रह्मसमाज के एन.के. मजूमदार को लिखे गए पत्र से स्पष्ट है- मेरे दृष्टिकोण से भारतवर्ष का एक बहुत बड़ा भाग ईसाई-धर्म में परिवर्तित हो चुका है। ईसामसीह के

अनुयायी बनने के लिए तुमको कुछ समझाने की आवश्यकता नहीं है। अपने लिए अपने मन का निश्चय करो। अपने समूह को एकत्रित रखने और विपथगामी होने से बचाने के लिए उनको मिलाये रखो। जो तुमसे पहले ही ईसाई बन चुके हैं, उन्होंने तुम्हारे लिए रास्ता साफ कर दिया है। दृढ़ता के साथ आगे बढ़ो, तुम्हारे पैरों के नीचे से जमीन नहीं खिसकेगी। दूसरी ओर तुम्हारा स्वागत करने के लिए तुमको अनेक मित्रगण मिलेंगे, उनमें से तुम्हारे प्राचीन मित्र और साथी कार्यकर्ता मैक्समूलर को सबसे बढ़कर आनन्द होगा। (The Life and Letter of Right Honorable Friedrich Max Muller, Vol. II, pp. 415-416.)

प्रो. होरेस हेमन विल्सन ऑक्सफोर्ड में कर्नल बोडन के नाम से स्थापित संस्कृत प्राध्यापक पद पर थे। उन्होंने एक पुस्तक लिखी- 'The Religious and Philosophical system of the hindus'। इस पुस्तक की रचना का आशय स्पष्ट करते हुए वे कहते हैं- 'ये व्याख्यान उन उम्मीदवारों की सहायता के निमित्त लिखे गए थे जो हिन्दुओं की धार्मिक पद्धति का भलीभाँति खण्डन करके हेलीबरी के प्रसिद्ध वयोवृद्ध सज्जन एवं संस्कृत के बड़े विद्वान् जॉन म्यूर द्वारा प्रदत्त दो सौ पौण्ड का पारितोषिक प्राप्त कर सकें।' (Eminent Orientalists, Madras, p. 72)।

इस उद्धरण से आप स्वयं निर्णय कर सकते हैं कि यूरोपीय विद्वानों के उद्देश्य कहाँ तक वैज्ञानिक कहे जा सकते हैं, उनके द्वारा प्रतिपादित सिद्धान्त कहाँ तक पक्षपातरहित एवं विश्वसनीय कहे जा सकते हैं और उनके द्वारा खींचा हुआ भारतीय सभ्यता और संस्कृति का चित्र कहाँ तक यथार्थ हो सकता है। सन् १८०३ में विल्सन के उत्तराधिकारी सर मोनियर-विलियम्स ने कर्नल बोडन द्वारा जिस उद्देश्य से इस प्राध्यापक पद की स्थापना की गई थी, उसकी ओर निम्नलिखित शब्दों में विद्वानों का ध्यान आकर्षित किया है- 'मुझे इस तथ्य की ओर ध्यान दिलाना आवश्यक प्रतीत होता है कि मैं बोडन प्राध्यापक-पद का दूसरा ही अधिकारी हूँ। इसके संस्थापक कर्नल बोडन ने अत्यन्त स्पष्ट शब्दों में दिनांक १५ अगस्त, १८११ के अपने इच्छा-पत्र (विल) में लिखा है कि इसकी इस उदारतापूर्ण भेंट का विशेष उद्देश्य यह था कि ईसाई-धर्मग्रन्थों का संस्कृत में अनुवाद किया जाए, जिससे भारतीयों को ईसाई बनाने के काम में हमारे देशवासी आगे बढ़ सकें।' (Sanskrit English Dictionary, by Sir Monier Williams, preface, p. ix)।

मोनियर विलियम्स यहीं पर रुके नहीं। वे आगे कहते हैं - अतः ब्राह्मण धर्म का नाश सुनिश्चित है। वास्तविक बात यह है कि बहुत साधारण वैज्ञानिक विषयों से सम्बन्धित झूठे विचार ब्राह्मण धर्म के सिद्धान्त से इतने घुल मिल गए हैं कि ईसाई मत की सहायता के बिना साधारण से साधारण शिक्षा यथा भूगोल के साधारण से साधारण पाठ भी निश्चय ही इस धर्म की जड़ उखाड़ फेंकेंगे। (Modern India and the Indians, by M.M. Williams, 3rd edition 1879, p. 261)। ब्राह्मण धर्म के शक्तिशाली दुर्ग की दीवारें जब घेर ली जायेंगी, उनके नीचे जब सुरंग लगा दी जायेगी और अन्त में क्रास के सिपाही उन पर धावा बोल देंगे तब ईसाई धर्म की यह निश्चित ही अपूर्व तथा पूर्ण विजय होगी। (Ibid, p. 262.)।

इन यूरोपीय विद्वानों को अपनी सरकारों से तथा भारत में ब्रिटिश सरकार से विपुल धनराशि की आर्थिक सहायता मिली जिसका उपयोग लेख लिखने में, पत्रिकाओं तथा पुस्तकों के प्रकाशन में खूब किया गया जिनके द्वारा बड़ी सूक्ष्म गहराई से तथा कपटवेश में प्रतिक्रियावादी विचारों का प्रचार किया गया। इन लोगों का बड़ी सावधानी के साथ यह प्रयत्न रहा कि उनकी पोल न खुलने पाए और अपनी विद्वता तथा निष्पक्षता का चोंगा ओढ़े रहकर दुनिया एवं भारत के लोगों को धोखा देते रहे। अधिकांश यूरोपीय विद्वानों के लेखों में ईसाई पक्षपात निश्चित रूप से विद्यमान है।

शोध-सहायक-सह-प्रकाशन-विभाग प्रमुख
अखिल भारतीय इतिहास संकलन योजना
बाबा साहेब आपटे स्मृति भवन, केशव कुंज, नई दिल्ली-५५
दूरभाष ०९६५४६६९२९३

आपकी लोकप्रिय पत्रिका सत्यार्थ सौरभ को सम्बल प्रदान करने हेतु श्री राजेन्द्रपाल वर्मा, आर्य समाज, वडोदरा ने संरक्षक सदस्यता (₹११०००) ग्रहण की है।
अनेकशः धन्यवाद
- भवानीदास आर्य, मंत्री-न्यास

प्रतिभा के धनी लुई ब्रेल

– अनिता शर्मा

दृष्टिबाधितों के मसीहा एवं ब्रेल लिपि के आविष्कारक लुई ब्रेल का जन्म फ्रांस के छोटे से गाँव कुप्रे में हुआ था। ४ जनवरी १८०६ को मध्यमवर्गीय परिवार में जन्मे लुई ब्रेल की आँखों की रोशनी महज तीन साल की उम्र में एक हादसे के दौरान नष्ट हो गई। परिवार में तो दुःख का माहौल हो गया क्योंकि ये घटना उस समय की है जब उपचार की इतनी तकनीक ईजाद नहीं हुई थीं जितनी कि अब हैं।

बालक लुई बहुत जल्द ही अपनी स्थिति में रम गये थे। बचपन से ही लुई ब्रेल में गजब की क्षमता थी। हर बात को सीखने के प्रति उनकी जिज्ञासा को देखते हुए, चर्च के पादरी ने लुई ब्रेल का दाखिला पेरिस के अंधविद्यालय में करवा दिया। बचपन से ही लुई ब्रेल की अद्भुत प्रतिभा के सभी कायल थे। उन्होंने विद्यालय में विभिन्न विषयों का अध्ययन किया।

कहते हैं ईश्वर ने सभी को इस धरती पर किसी न किसी प्रयोजन हेतु भेजा है। लुई ब्रेल की जिन्दगी से तो यही सत्य उजागर होता है कि उनके बचपन के एक्सीडेंट के पीछे ईश्वर का कुछ खास मकसद छुपा हुआ था। १८२५ में लुई ब्रेल ने

मात्र १६ वर्ष की उम्र में एक ऐसी लिपि का आविष्कार कर दिया जिसे ब्रेल लिपि कहते हैं। इस लिपि के आविष्कार ने दृष्टिबाधित लोगों की शिक्षा में क्रान्ति ला दी।

गणित, भूगोल एवं इतिहास विषयों में प्रवीण लुई की अध्ययन काल में ही फ्रांस की सेना के कैप्टन चार्ल्स बार्बियर से मुलाकात हुई थी। उन्होंने सैनिकों द्वारा अँधेरे में पढ़ी जाने वाली नाइट राइटिंग व सोनोग्राफी के बारे में बताया। ये लिपि उभरी हुईं तथा १२ बिंदुओं पर आधारित थीं। यहीं से लुई ब्रेल को आइडिया मिला और उन्होंने इसमें संशोधन करके ६ बिंदुओं वाली ब्रेल लिपि का आविष्कार कर दिया। प्रखर बुद्धिवान् लुई ने इसमें सिर्फ अक्षरों या अंकों को ही नहीं बल्कि सभी चिह्नों को भी प्रदर्शित करने का प्रावधान किया।

उनकी प्रतिभा का आलम ये था कि, उन्हें बहुत जल्द ही विद्यालय में अध्यापक के रूप में नियुक्त किया गया। शिक्षक के रूप में भी वो सभी विद्यार्थियों के प्रिय शिक्षक थे। लुई ब्रेल सजा देकर पढ़ाने में विश्वास नहीं करते थे। उन्होंने शिक्षा पद्धति को एक नया आयाम दिया तथा स्नेहपूर्ण शिक्षापद्धति से अनूठी मिसाल कायम की।

उनका जीवन आसान नहीं था। परन्तु उनके अंदर आत्मविश्वास से भरी ऐसी शक्ति विद्यमान थी, जिसने हमेशा आगे बढ़ने को प्रोत्साहित किया। समाज में एक ऐसा वर्ग भी विद्यमान था, जिसने उनकी योग्यता को उनके जीवन काल में अनेकों बार उपेक्षित किया। अपनी धुन के पक्के लुई ब्रेल को इस बात से कोई फरक नहीं पड़ता था। वो तो एक संन्यासी की तरह अपने कार्य को अंजाम तक पहुँचाने में पूरी निष्ठा से लगे रहे। उन्होंने सिद्ध कर दिया कि जीवन की दुर्घटनाओं में अक्सर बड़े महत्व के नैतिक पहलू छिपे हुए होते हैं।

लुई ब्रेल के जीवन ने इस कथन को शत-प्रतिशत सच साबित कर दिया कि-

ये तो सच है कि जरा वक्त लगा देते हैं लोग,
फन को मनवा दो तो फिर सर पर बिठा लेते हैं लोग।

उनको जीवनकाल में जो सम्मान नहीं मिल सका वो उनको मरणोपरांत फ्रांस में २० जून १९५२ के दिन सम्मान के रूप में मिला। उनके पार्थिव शरीर को मृत्यु के १०० साल बाद वापस राष्ट्रीय सम्मान के साथ दफनाया गया। अपनी ऐतिहासिक भूल के लिये फ्रांस की समस्त जनता तथा नौकरशाही ने लुई ब्रेल के नश्वर शरीर से माफी माँगी। भारत में २००९ में ४ जनवरी को उनके सम्मान में डाक टिकट जारी किया जा चुका है।

उनके मन में अपने कार्य के प्रति ऐसा जुनून था कि वे अपने स्वास्थ्य का भी ध्यान नही रख पाते थे, जिससे वे ४३ वर्ष की अल्पायु में ही क्षय रोग की चपेट में आ गये। लुई ब्रेल का जीवन ए.पी.जे. कलाम साहब के कथन को सत्यापित करता है। कलाम साहब ने कहा था- 'अपने मिशन में कामयाब होने के लिये आपको अपने लक्ष्य के प्रति एकाग्रचित्त होना पड़ेगा।'

४३ वर्ष की अल्पायु में ही दृष्टिबाधितों के जीवन में शिक्षा की ज्योति जलाने वाला ये प्रेरक दीपक ६ जनवरी १८५२ को इस दुनिया से अलविदा हो गया। एक ऐसी ज्योति जो स्वयं देख नहीं सकती थी लेकिन अनेकों लोगों के लिये शिक्षा के क्षेत्र में नया प्रकाश कर गई।

लुई ब्रेल को नमन करते हैं –

खुद अपने आप में सिमटी हुई सदी है ये,
इन्हें करीब से देखो तो जिन्दगी है ये।

परम तपस्वी आचार्य बलेदव जी नहीं रहे
आर्यसमाज की अपूरणीय क्षति

आर्य जगत् के महान तपस्वी, अनेक व्यक्तित्वों के निर्माता, गौ-सेवक आचार्य बलदेव जी का निधन दिनांक २८ जनवरी २०१६ को रोहतक में हो गया।

पूज्य आचार्य बलदेव जी महाराज का जन्म ग्राम सरगथल, जिला सोनीपत में श्री गूगनसिंह जी के घर २५ अक्टूबर १६३२ को हुआ था। आचार्य जी का जीवन त्याग एवं सदाचार से भरा रहा। उन्होंने जाट कालेज, रोहतक से एस.एस.सी. तक शिक्षा प्राप्त करने के पश्चात् पूज्य आचार्य स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती (गुरुकुल झज्जर) के सान्निध्य में रहकर १६६२ से १६७१ तक गुरुकुल झज्जर तथा बाद में वर्ष १६७१ से २००० तक गुरुकुल कालवा में श्रद्धापूर्वक कार्य किया। वर्ष १६६२ में गुरुकुल झज्जर में स्थायी रूप में आने से पूर्व आचार्य बलदेव जी ने आचार्य भगवान देव जी के आदेश से गुरुकुल सिरसागंज में जाकर व्याकरण का अध्ययन किया। तत्पश्चात् गुरुकुल झज्जर के स्नातक पं. राजवीर शास्त्री से बेरी में रहकर इन्द्रदेव ब्रह्मचारी के साथ व्याकरण महाभाष्य की शिक्षा क्रियात्मक रूप से प्राप्त की।

आपने वर्ष १६६२ में गुरुकुल झज्जर में आकर मुख्याध्यापक का पद सम्भाला। उसी समय से काशिका और महाभाष्य पढ़ाना आरम्भ कर दिया था जिसके फलस्वरूप आपने अनेक विद्वान् तैयार किए। जैसे स्वामी रामदेव जी, आचार्य बालकिशन जी, डॉ. सतीश (अमेरिका), स्वामी विवेकानन्द, प्रभात आश्रम टीकरी, डॉ. रघुवीर वेदालंकार, आचार्य दयानन्द (कितलाना), स्वामी दिव्यानन्द जी (हरिद्वार), स्वामी चन्द्रवेश जी (टिटौली), स्वामी प्रणवानन्द जी (दिल्ली), डॉ. योगानन्द शास्त्री (दिल्ली), आचार्य विजयपाल (मकड़ौली कलां) रोहतक आदि दर्जनों शिष्यों को पढ़ाया। तत्पश्चात् आपने आर्य प्रतिनिधि सभा, हरियाणा के प्रधान पद को सुशोभित किया। सभा के वेदप्रचार की गतिविधियों को गाँव-गाँव में घूमकर चरम सीमा तक पहुँचाया तथा अनेक पाखण्डों का जमकर विरोध किया, जिसमें रामपाल जैसे ऋषि-द्वेषी की जड़ें करोंथा से उखाड़ फैंकने का कार्य उल्लेखनीय है। बाद में पूज्य आचार्य जी जुलाई २०१२ से सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली के प्रधान पद को सुशोभित कर रहे थे।

आचार्य जी का हमारे मध्य से चले जाना आर्य जगत् की महती क्षति है, जिसकी पूर्ति कदापि नहीं हो सकती। प्रभु दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें। आचार्य जी को आर्य जगत् की सच्ची श्रद्धांजलि यही होगी कि वे महर्षि-मिशन को प्राणप्रण से पूर्ण करने में जुट जावें।

- अशोक आर्य

संसदीय समिति के सदस्यों ने किया नवलखा महल का अवलोकन

मानव संसाधन मंत्रालय की संसदीय स्थायी समिति के सदस्य सांसद जब उदयपुर में राजकीय कार्य से आये तो उसी समिति के सम्माननीय सदस्य और श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास के संस्थापक सदस्य पूज्य स्वामी सुमेधानन्द जी सरस्वती की प्रेरणा पर अनेक सांसद तथा अधिकारी

नवलखा महल पधारे। जहाँ न्यास के मंत्री श्री भवानी दास आर्य तथा संयुक्त मंत्री डॉ. अमृतलाल तापड़िया ने क्रमशः माल्यार्पण तथा ओ३म् दुपट्टे से उनका स्वागत किया। सभी माननीय अतिथि नवलखा महल स्थित आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा, चौदह खण्डीय सत्यार्थप्रकाश स्तम्भ, म्यूजीकल फाउण्टेन, भव्य यज्ञशाला, माता लीलावंती सभागार तथा श्रीमती ब्रजलता आर्या मल्टीमीडिया सेंटर का अवलोकन कर अभिभूत हो गए। सभी ने काफी सराहना की। नागौर के सांसद श्री सी.आर. चौधरी ने सभी की ओर से भावाभिव्यक्ति की जो नीचे दी जा रही है।

"We are fortunate to see the 'Swami Dayanand Smarak and Picture gallery at Navlakha Mahal Gulab bagh, Udaipur. I would like to thank hon'ble Shri Sumedhanand Saraswati who inspired us to visit such a lovely Smarak which itself is a very peaceful place and we got the " Jivan Darshan ' of Swamiji in the picture gallery. At this juncture we would like to thank Shri Ashok Arya ji and office members of management who are honorarily giving their services for the pious work.

This building was in a dilapidated shape when I was S.D.M. of Udaipur but thanks and welcome to the management who have made it a very beautiful and attractive Smarak.

Our best wishes are with the management and hope this Smarak will come in the National map for it's Importance."

पारिवारिक मासिक सत्संग: स्लाइड-शो के माध्यम से सत्यार्थप्रकाश बना रुचिकर

नवलखा महल के माता लीलावंती सभागार में दिनांक ७ फरवरी २०१६ को आयोजित मासिक सत्संग में रुचि तथा सम्प्रेषण को गहन करने के उद्देश्य से कुछ नवीन प्रयोग किए गए। श्री नवनीत आर्य के पौरोहित्य में सम्पन्न यज्ञोपरान्त सभागार में सत्संग का कार्यक्रम न्यास मंत्री श्री भवानीदास जी द्वारा प्रस्तुत भजन के साथ हुआ। तत्पश्चात् श्री अशोक आर्य द्वारा तैयार वीडियो-भजन (इतनी शक्ति हमें देना दाता.....) श्रीमती ब्रजलता आर्या मल्टीमीडिया के द्वारा प्रस्तुत किया गया। इसी माध्यम का अत्यन्त सफल व प्रभावी प्रयोगकर स्लाइड-शो के माध्यम से सत्यार्थप्रकाश के प्रथम समुल्लास पर श्री आर्य ने विचार प्रस्तुत किए। इन नवीन प्रयोगों को सम्भागियों द्वारा अत्यन्त प्रभावशाली बताते हुए इस क्रम को जारी रखने का अनुरोध किया गया।

इस अवसर पर सफाई कर्मचारी आयोग (राज. सरकार) के सदस्य श्री मुरली मनोहर जी बन्धु का न्यास मंत्री द्वारा अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन डॉ. नरेन्द्र सनाढ्य ने किया।

- सुरेशचन्द्र पाटोदी

संन्यासी की सहनशीलता

स्वामी सदानन्द सरस्वती

वैदिक धर्म में मनुष्य समाज को वर्ण तथा आश्रमों में विभक्त किया गया है। मनुष्य समाज के प्रबन्ध तथा सुख के लिए यह बहुत ही महत्व की बात है। धर्मशास्त्र में प्रत्येक वर्णाश्रम के कुछ कर्तव्य तथा अधिकार बताये हैं। अन्याश्रमों की भाँति संन्यासी के कर्तव्यों का बहुत विस्तार से वर्णन है। और वे सभी कर्तव्य कर्म-धर्म, नाम में औरों की भाँति संन्यासी की सहनशीलता में जुड़े हुए हैं। पूज्य स्वामी स्वतंत्रानन्द जी महाराज की आर्य तथा पौराणिक संन्यासियों में बहुत प्रतिष्ठा थी। और इसका कारण था उनका तप, त्याग, ब्रह्मचर्य, नियमित जीवन। ये सभी गुण सहनशीलता के सहवासी हैं। पूर्ण सहनशीलता का नैरन्तर्य ही समता है जिसे गीताकार ने **'समत्वं योगमुच्यते'** कहा है अर्थात् योगी वह है जिसके मन की शांति समता एकरस रहने को भूख, प्यास, सुख, दुःख, काम, क्रोध मानापमान भंग नहीं कर सकते। मनुष्य जीवन में यह सर्वोत्तम स्थिति है यही स्थिति मुक्तिमार्ग को प्रशस्त करती है। वास्तव में इस अवस्था को पाने के लिए ही संन्यास है और इस अवस्था में पहुँचने के पश्चात् मनुष्य जिस सुख, आनन्द को अनुभव करता है उसका शतांश भी इन सांसारिक भोगों में नहीं है। यह वह स्थिति व्यवस्था है जहाँ से गिरने का भय नहीं रहता।

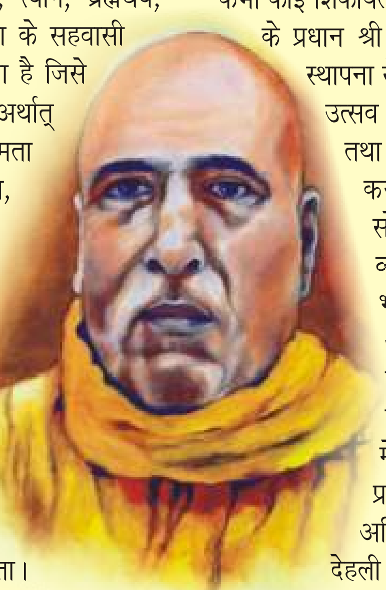

हमारे नेता को पारखीजन इस स्थिति में देखकर आश्चर्य करते और श्रद्धा से नतमस्तक हो जाते हैं क्योंकि इस असामान्य अवस्था स्थिति में जीवन की सभी क्रियाएँ चेष्टाएँ जन सामान्य से भिन्न होने लगती हैं। स्वामी जी महाराज का सारा जीवन इसी प्रकार की क्रियाओं का समूह था।

गर्मी के दिनों में स्वामी जी महाराज दयानन्द मठ में एक आम वृक्ष के नीचे बैठकर पढ़ने-लिखने का कार्य दिनभर करते रहते थे। वृक्ष की शाखाओं के बीच से कभी-कभी थोड़ी बहुत देर के लिए धूप भी आ जाती। इस वृक्ष की छाया थी भी निराली। एक दिन लाला अलखधारी जी वकील प्रधान आर्य समाज गुरदासपुर दोपहर में स्वामी जी महाराज के समीप बैठे बातें कर रहे थे कि स्वामी जी महाराज पर धूप आ गई। प्रधान जी ने कहा कि आपका तख्त आगे पीछे छाया में कर देते हैं। स्वामी जी महाराज ने कहा यह थोड़ी देर में हट जायेगी। यहाँ दिनभर यही हाल रहता है धूप आती-जाती रहती है किन्तु आप अपने एक स्थान पर बैठे अपना कार्य निरन्तर करते रहते थे। धूप छाया का कोई प्रभाव इन पर न होता। शीतकाल में लोग अग्नि तापते हैं अधिक गर्मी में पंखा झलते हैं। कितनी ही ठण्ड हो जाए वे अग्नि के पास कभी नहीं बैठते थे। अधिक गर्मी में भी कभी हाथ में पंखा लेकर नहीं झला। पसीना आने पर अंगोछे से पोंछ देते थे।

समय पर भोजन न मिलने पर कई-कई दिन भूखे रहते और कभी कोई शिकायत किसी से न करते। दीनानगर आर्य समाज के प्रधान श्री लाला देवदत्त जी ने सुनाया कि मठ की स्थापना से पूर्व हमारी प्रार्थना पर स्वामी जी महाराज उत्सव में पधारे। दोपहर कार्यवाही लम्बी होने से तथा भूल जाने से दो दिन तक उन्हें भोजन न करा सके। शुक्रवार सायंकाल आये और सोमवार भूखे ही लाहौर लौट गए। समय पर व्याख्यान देते रहे। उनके भोजन न करने पर भी उनकी बातचीत और आकृति में कोई अन्तर नहीं था। किन्तु स्थानीय अधिकारी ये सोचते थे कि अब स्वामी जी महाराज हमारी प्रार्थना पर कभी न आयेंगे। लाहौर में रहते हुए कई वर्ष तक आप आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के वेद प्रचार अधिष्ठाता रहे, जबकि पंजाब पेशावर से देहली तक एक था। इस सभा का कार्य तथा शक्ति उस समय बहुत बड़ी थी। स्वामी जी महाराज स्वयं, स्वामी वेदानन्द जी महाराज, महाशय कृष्ण जी, पंडित लोकनाथ जी तर्क वाचस्पति, पंडित बुद्धदेव जी विद्यालंकार, पंडित बुद्धदेव जी मीरपुरी, पंडित प्रियव्रत जी वेद वाचस्पति, पंडित यशपाल जी सिद्धान्तालंकार, पंडित चिरंजीलाल जी प्रेम, पंडित शांतिप्रकाश जी शास्त्रार्थ महारथी इस प्रकार अन्य सैंकड़ों आर्य विद्वानों के साथ वैदिक धर्म के प्रचारार्थ पंजाब तथा उसके बाहर निरन्तर सभा के कार्यक्रमों में घूमते रहते थे। एक बार आर्य समाज अजनाला, अमृतसर के उत्सव पर उपदेशकों के साथ स्वयं भी पहुँचे। सायंकाल बाहर घूमने गये। साथ में महाशय बिहारी लाल जी भजनीक भी चल पड़े। अन्य एक दो व्यक्ति भी साथ थे। श्री महाशय बिहारीलाल जी ने मार्ग में अपने दुखड़े कहने आरम्भ किए कि आप हमें सुदूर ऐसे ग्रामों का प्रोग्राम दे देते हैं जहाँ न रेल, न मोटर, न तांगा,

न कुली ही मिलता है। हम धक्के खाते-फिरते रहते हैं। आप लाहौर में कुर्सी पर बैठे रहते हैं। आप को क्या पता ग्राम प्रचार में क्या कठिनाई आती है। अन्य कई कटु और अशिष्ट शब्दों का प्रयोग भी किया। कई साथ चलने वाले महाशय बिहारी लाल जी को रोकने लगे। स्वामीजी ने उन्हें न रोकने का इशारा किया, उनकी अशिष्ट तथा कटु भाषा में कही बातों को शांति से सुनते रहे और उन पर कोई रोष न किया। दीनानगर के प्रतिष्ठित व्यक्ति मठ में स्वामी जी महाराज के निकट बैठकर वार्तालाप करते थे। दिन में मास्टर बक्शीशराम जी, लाला देवराज, श्री धर्मदत्त जी तथा भज्रसेन जी ओहरी के नाम विशेष हैं। श्री गुप्ता, लाला देवदत्त जी, लाला धर्मदत्त जी एक दिन एक समाचार पत्र लाए और कहा कि इसमें आपको कई गालियाँ और अपशब्द लिखे हैं और लिखा है कि एक गीदड़ रंगा साधु दीनानगर में आ गया है जिसने मुसलमान रियासत हैदराबाद को तबाह कर दिया है अब इधर ऐसे ही कारनामों की आशा रखनी चाहिए। इस प्रकार मुसलमानों को खूब भड़काया गया। स्वामीजी महाराज कोई उत्तर न देकर समाचार पत्र पढ़ने लगे। निन्दा-स्तुति का उन पर कोई प्रभाव कभी देखने में नहीं आया। मनु की यह बात उन पर पूर्णतया चरितार्थ होती है 'दूषितोअपि चरेत् धर्मः समः सर्वेषु भूतेषु' अर्थात् संन्यासी पर कोई कितना ही दोष लगाये या बुरा कहे किन्तु धर्म का ही आचरण करे सब में समान बर्ते। किसी की निन्दा श्री मुख से कभी किसी ने नहीं सुनी। आपने अपने जीवन में सहस्रों व्यक्तियों के काम किए, अनेक प्रकार की सहायता दी, विवाद निपटाये।

स्वामी जी यद्यपि आर्य समाज के धार्मिक नेता थे किन्तु सभी प्रान्तों के बड़े-बड़े राजनीतिक लोगों से भी सम्बन्ध बनाये रखे और उनसे समाज तथा व्यक्तियों के काम करवाते थे। महाशय कृष्ण जी चौधरी और छोटूराम जी परस्पर विरोधी होते हुए भी स्वामी जी महाराज के पास घंटों बैठते थे। पंजाब के मुख्यमंत्री लगातार अनेक बार आये कि आप हमारे हरयाणे में सुलह करवा दो। स्वामी जी महाराज के अन्य कई कार्य ऐसे थे जिनका वर्णन नहीं किया जा सकता। आश्चर्य की बात यह है कि अपने किसी कार्य का कभी किसी से जिक्र नहीं करते थे। अभिमान, काम, क्रोध, लोकेषणा, वित्तेषणा का त्याग तपस्या, ब्रह्मचर्य, निर्भयता, नियम पालन इस प्रकार के गुण उनके जीवन में मूर्तिमान बनकर रहे थे। धन्य हैं यह आर्य जाति जो ऐसे वीतराग पुरुषों को जन्म देती है।

– अध्यक्ष दयानन्द मठ, दीनानगर

कर्मयोगी महाशय धर्मपाल
अध्यक्ष - न्यास

सुखी वही होता इस जग में,
मंजिल अपनी पाता है।
सत्य, न्याय और कर्मयोग को,
जो अपने गले लगाता है।।

सत्यार्थ सौरभ
घर-घर पहुँचावें

₹5100 का पुरस्कार प्राप्त करें
''सत्यार्थ सौरभ'' के सदस्य बनें

अविलम्ब बहुप्रशंसित पत्रिका 'सत्यार्थ सौरभ' के सदस्य बनें, जो पहले से सदस्य हैं अपना नवीनीकरण करावें और सत्यार्थ सौरभ में छप रही 'सत्यार्थप्रकाश पहेली' में भाग लेने की पात्रता प्राप्त करें और पावें ₹5100 का पुरस्कार।

पूर्ण विवरण पृष्ठ ३० पर देखें।

नवलखा महल में नवनिर्मित ''आर्यावर्त्त चित्रदीर्घा'' एवं सत्यार्थ प्रकाश स्तम्भ के बारे में दर्शकों के विचार

बहुत ही सुन्दर, प्रभावशाली, ज्ञान का प्रकाश करने वाली एवं स्वर्ग सा आनन्द देने वाली इस चित्रदीर्घा से मैं बहुत प्रभावित हूँ। इसके संचालन करने वालों को कोटिशः धन्यवाद।

– गिरीश शर्मा, ईसवाल

मुझे यहाँ आकर परम आनन्द की अनुभूति हुई व कई प्रकार से प्रेरणा मिली। बहुत ही सुन्दर और सरल रूप से भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का वर्णन यहाँ की विशेषता है।

– अजय पुरोहित, जोधपुर

अत्युत्तम! भारतीय संस्कृति की गौरव गाथा की अनुपम आर्ट गैलरी। प्राचीन संस्कृति, वेद, संहिता आदि के बारे में अद्भुत जानकारी। अत्यन्त श्रेष्ठ प्रयास।

– गिरीश तिवारी, भरतपुर

''असहिष्णुता''
कहीं नहीं

मैं एक मुस्लिम महिला हूँ और पेशे से डाक्टर हूँ। बंगलौर में मेरी एक हाइ एण्ड लेजर स्किन क्लिनिक है। मेरा परिवार कुवैत में रहता है। मैं भी कुवैत में पली बढ़ी हूँ लेकिन १८ साल की उम्र में डाक्टरी की पढ़ाई करने के लिए मैं भारत लौट आयी थी। पढ़ाई खत्म होने के बाद जहाँ मेरे ज्यादातर साथी अच्छे भविष्य के सपने के साथ बाहर चले गये, मैंने भारत में ही रहने का निश्चय किया। आज तक मैंने एक बार भी कभी यह महसूस नहीं किया कि एक मुसलमान होने के कारण हमें कोई दिक्कत हुई हो। मुझे अपने देश से प्रेम था और मैंने भारत में ही रहने का निश्चय किया।

मैंने डाक्टरी की पढ़ाई कर्नाटक के मणिपाल से किया। जैसे सब अकेले रहते थे, मैं भी अकेली रहती थी। मेरे सारे प्रोफेसर हिन्दू थे। आसपास जो लोग थे वे सभी हिन्दू थे। मैंने एक बार भी कभी यह महसूस नहीं किया कि मेरे साथ मुसलमान औरत होने के कारण भेदभाव हो रहा है। सब मेरे प्रति उदार रहते थे और कई बार तो वे यह अहसास दिलाने के लिए कि मैं उनके बीच का ही एक हिस्सा हूँ, ज्यादा प्रयास करते थे। मणिपाल में सबने मुझे जरूरत से ज्यादा सहूलियत देने की कोशिश की।

मणिपाल में पढ़ाई खत्म होने के बाद मैं अपने पति के साथ बंगलौर में बस गयी। तब तक मेरी शादी हो चुकी थी और हमने तय किया कि हम बंगलौर में ही बसेंगे। ऐसा सोचने के पीछे एक कारण था। यहाँ मैं अपने पति के बारे में आपको बताना चाहूँगी, वे भी मुसलमान हैं। उनका पहला नाम इकबाल है। उन्होंने चेन्नई से एमटेक किया है और जर्मनी से पीएचडी। वे एयरोस्पेस इंजिनियर हैं। उनका काम ऐसा है कि वे भारत की सबसे सुरक्षित संस्थाओं जैसे डीआरडीओ, जीटीआरई, इसरो, आईआईएससी, भेल में आते-जाते रहते हैं। लेकिन कहीं भी आने-जाने में आज तक उन्हें मुसलमान होने के कारण कभी कोई परेशानी नहीं हुई। ऐसी अतिसुरक्षित जगहों पर आज तक एक बार भी उनकी ऐसी तलाशी नहीं ली गयी जिसके लिए अमेरिका जैसे आधुनिक देश बदनाम हो चुके हैं। उन्हें कभी ऐसा महसूस नहीं हुआ कि मुसलमान होने के कारण उनके साथ किसी तरह का भेदभाव किया गया हो। मोदी सरकार आने के बाद भी नहीं। बल्कि नई सरकार आने के बाद तो सरकारी संस्थानों में सुरक्षा के उपाय और भी अनुशासित हुए हैं।

मेरे पति बताते हैं कि अमेरिका में ऐसा नहीं है। वे जब भी अमेरिका जाते हैं तो सिर्फ मुसलमान होने के कारण उनके ऊपर नजर रखी जाती है। इकबाल जब भी अमेरिका जाते हैं तो उन्हें कपड़े उतारकर तलाशी देनी पड़ती है। जर्मनी में जिन दिनों वे पीएचडी कर रहे थे उस वक्त भी उन पर एक मुसलमान होने के कारण गुप्त रूप से नजर रखी जाती थी। एक बार तो बाकायदा चिट्ठी भेजकर हमें सूचित किया गया कि आप पर नजर रखने के दौरान हमें कोई संदिग्ध गतिविधि नजर नहीं आई, इसलिए अब हम किसी प्रकार के संदेह के घेरे में नहीं हैं। मेरे पति अपने सहयोगियों के बीच पूरा सम्मान, समर्थन और मुहब्बत पाते हैं। और उनके सहयोगियों में सभी हिन्दू हैं। सरकार बदलने के बाद भी हालात में किसी तरह का कोई बदलाव नहीं हुआ है। इसलिए असहिष्णुता एक ऐसा शब्द है जो हमारे लिए कोई मायने ही नहीं रखता।

मोदी सरकार के बनने से थोड़ा समय पहले ही पिछले साल मैंने अपना क्लिनिक खोला। मैं समय से अपना टैक्स भरती हूँ और कामकाज में कानूनों का पूरी तरह से पालन करती हूँ। मैं अपने कामकाज के दौरान ऐसा कुछ भी करने से बचती हूँ जिसके कारण मेरे ऊपर कोई मुसीबत आ सकती है। मैं बहुत आराम से अपनी क्लिनिक चला रही हूँ। मेरे ज्यादातर पेशेन्ट्स हिन्दू हैं। क्लिनिक का मेरा पूरा स्टाफ हिन्दू है। और मेरा विश्वास करिए, क्लिनिक की देखभाल वे मुझसे ज्यादा अच्छी तरह से करते हैं। बीते बीस सालों में सरकारी, गैर सरकारी बहुत सारी जगहों पर आना-जाना हुआ है लेकिन मुझे आज तक कभी यह महसूस नहीं हुआ कि सिर्फ मुसलमान होने के कारण मेरे साथ कोई भेदभाव किया जा रहा है। शायद यही वह अपनापन है कि मैं अपने देश को नहीं छोड़ पा रही हूँ। मेरा पूरा परिवार बाहर रहता है और बाहर जाने के लिए मुझे कुछ नहीं करना है सिर्फ एक बार कहना ही है। कुवैत सरकार की तरफ से क्लिनिक

खोलने का मेरे पास ओपन ऑफर है जो मेरे लिए कमाई की यहाँ से ज्यादा बेहतर जगह हो सकती है। अगर मेरे साथ सिर्फ मुसलमान होने के कारण भेदभाव होता तो सारी संभावनाओं को नकारकर मैं यहाँ क्यों रहना चाहती? मैं दुनिया के कई देशों में रही हूँ और आती-जाती रही हूँ लेकिन सिर्फ भारत में मुझे घर में रहने जैसा महसूस होता है। यही वह फर्क है जो एक भारतीय मुसलमान के लिए भारत को दुनिया के दूसरे देशों से अलग करता है।

मैं कुवैत में ही पली-बढ़ी और चालीस साल से मेरा परिवार वहाँ रह रहा है लेकिन आज भी हम उनके लिए कुछ नहीं हैं। हमारे परिवार वाले आज भी बाहरी हैं और उन्हें वहाँ कोई अधिकार प्राप्त नहीं है। हमें नियमित तौर पर अपना रेजिडेन्ट वीजा रेन्यू कराना पड़ता है। कानूनों में निरंतर बदलाव होता रहता है जिसके कारण जिन्दगी दिन ब दिन जटिल से जटिल होती जाती है। हमारे लिए यह जरूरी है कि उनके बनाये कानूनों का हम अनिवार्य रूप से पालन करें। ठीक है। इसमें कोई बुराई नहीं है लेकिन उनके कानून बनाये ही जाते हैं भेदभाव के आधार पर। हमारे साथ खुलेआम भेदभाव होता है। अरब के लोग अपने आपको पहले दर्जे का नागरिक मानते हैं, गोरे लोगों को दूसरे दर्जे का और एशियाई लोगों को तीसरे दर्जे का नागरिक मानते हैं। हालांकि हम वहाँ रहकर नाखुश नहीं हैं लेकिन वहाँ रहते हुए कभी लगता ही नहीं कि हमारा यहाँ से कोई ताल्लुक है। मैं जब कुवैत में रहती थी या अब भी जब मैं कभी-कभार आती जाती हूँ तो मुझे कभी वहाँ किसी प्रकार का अपनापन महसूस नहीं होता है। हम मुसलमान हैं और एक मुसलमान देश में जाते हैं फिर भी हमें भारतीय समझा जाता है और किसी प्रकार की कोई अतिरिक्त सहूलियत नहीं दी जाती है। मैंने बहुत पहले यह महसूस कर लिया था कि सिर्फ भारत ऐसा देश है जहाँ रहने पर उसके साथ अपनेपन का अनुभव होता है। आप अमेरिका में हैं तो इंडियन अमेरिकन हैं, कनाडा में हैं तो इंडियन कनाडियन हैं, ब्रिटेन में हैं तो इंडियन ब्रिटिश हैं लेकिन सिर्फ भारत एकमात्र ऐसा देश हैं जहाँ आप हैं तो आप केवल भारतीय हैं। सिर्फ अपने घर में आप घर में होने जैसा अनुभव कर सकते हैं।

तो, जो ये हीरो लोग असुरक्षित होने की बात बोल रहे हैं वे किस देश की बात कर रहे हैं? एक सामान्य नागरिक के रूप में मैं और मेरे पति ने आज तक किसी तरह का भेदभाव महसूस नहीं किया है तो फिर वह कौन सा भेदभाव है जो उनके साथ हो गया है? आमिर खान की पत्नी किरण राव किस बात से इतना डर गयी हैं? वे बड़े लोग हैं। मंहगे इलाकों में रहते हैं। उनके बच्चे बड़े से बड़े स्कूलों में पढ़ते हैं और उनके पास अपना

निजी सुरक्षातंत्र है जो चौबीसों घण्टे उनकी रखवाली करता है। मैं हर वक्त अकेले यात्रा करती हूँ और मुझे आज तक कभी कहीं डर नहीं लगा। एक जिम्मेदार नागरिक के तौर पर मैं आमिर खान और शाहरुख खान से जानना चाहती हूँ कि आखिर उन्होंने इतना गैर जिम्मेदार बयान क्यों दिया? जिसके कारण देश के १८ करोड़ मुसलमानों की इमेज को धक्का लगा है? उनको यह आजादी किसने दी है कि दुनिया में वे मेरे देश का नाम बदनाम करें कि भारत में मुसलमान सुरक्षित नहीं है? पाकिस्तान की हिम्मत कैसे हो गयी कि वह उन्हें अपने देश में बसने का न्यौता दे रहा है? ऐसे वक्त में जब मैं मुसलमानों के लिए अपने हिन्दू मित्रों की टिप्पणियाँ पढ़ रही हूँ तो मुझे बुरा लग रहा है। मुझे डर लग रहा है कि हिन्दुओं को उकसाया जा रहा है कि वे अपनी वह सहिष्णुता और स्वीकार्यता छोड़ दें जिसके कारण बीते बीस सालों में मुझे कभी किसी दिक्कत का सामना नहीं करना पड़ा। मुझे डर लग रहा है कि हमारे अपने मूर्ख और एहसान फरामोश लोगों की वजह से हमारी छवि इतनी खराब न हो जाए कि मैं अपने ही देश में बेगानी हो जाऊँ। आखिर कब तक इस देश के बहुसंख्यक हिन्दू यह बदतमीजी बर्दाश्त करेंगे? मुसलमानों के लिए यह वक्त है कि वे स्वतंत्रता और स्वीकार्यता की कीमत समझें। फिर भी अगर वे समझ नहीं पाते हैं तो मैं यही दुआ करूँगी कि मेरे हिन्दू भाइयों का धैर्य असीमित हो जाए और वह कभी भी खत्म न हो।

डॉ. सोफिया रंगवाला , स्किन विशेषज्ञ, बंगलौर

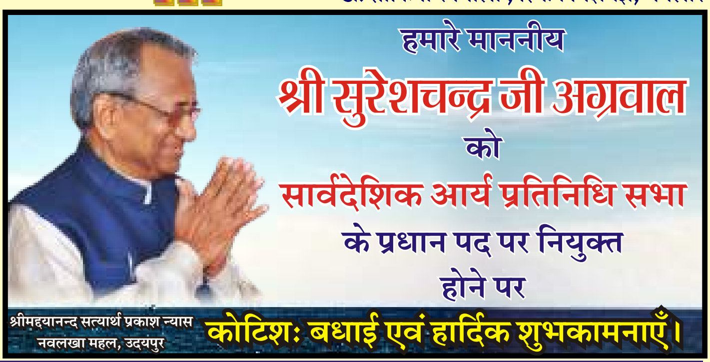

समाचार

वेद मंत्र पाठ प्रतियोगिता २०१६ सम्पन्न

श्री सुरेश चन्द गुप्ता चेरिटेबल ट्रस्ट एवं आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर के तत्वावधान में उक्त प्रतियोगिता २६ जनवरी २०१६ को सम्पन्न हुई, जिसमें चालीस विद्यालयों के कुल ७२ विद्यार्थियों ने भाग लिया। **कनिष्ठ** वर्ग में प्रथम तथा द्वितीय स्थान क्रमशः साक्षी वैष्णव, केन्द्रीय विद्यालय, प्रतापनगर, उदयपुर एवं उत्कर्ष अग्रवाल, सेन्ट पॉल स्कूल, उदयपुर ने प्राप्त किया। चल वैजयन्ती सेण्ट एन्थोनी स्कूल, बलीचा, उदयपुर को प्राप्त हुई। **वरिष्ठ वर्ग** में प्रथम तथा द्वितीय स्थान क्रमशः अनन्त शर्मा, सीडलिंग मॉडल स्कूल तथा पल्लव शर्मा, सीडलिंग मॉडल स्कूल ने प्राप्त किया। विट्टी इन्टरनेशनल स्कूल, उदयपुर ने प्रथम बार इस प्रतियोगिता में भाग लिया और इस विद्यालय की तानिया माहिया ने तृतीय स्थान प्राप्त किया। वरिष्ठ वर्ग की चल वैजयन्ती सीडलिंग मॉडर्न पब्लिक स्कूल ने विजित की। इस अवसर पर डॉ. अजीत गुप्ता, पूर्व अध्यक्ष, राजस्थान साहित्य अकादमी ने अध्यक्ष का पद सुशोभित किया। निर्णायक श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर, प्रो. डॉ. अमृत लाल तापड़िया, पूर्व रजिस्ट्रार, महाराणा प्रताप कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय एवं श्री सत्यव्रत शास्त्री, मंत्री आर्य समाज (पिछोली), उदयपुर थे। संचालन श्रीमती प्रेमलता मेनारिया एवं धन्यवाद 'सुरेश चन्द्र गुप्ता चेरिटेबल ट्रस्ट' की प्रमुख न्यासी व कार्यक्रम की आयोजक श्रीमती शारदा गुप्ता ने ज्ञापित किया।

मकर संक्रान्ति पर्व धूमधाम से मनाया गया

दिनांक १७ जनवरी २०१६ को आर्य समाज, स्वामी दयानन्द मार्ग, अलवर के तत्वावधान में आर्य कन्या विद्यालय समिति की ओर से मकर संक्रान्ति पर्व श्री जगदीश प्रसाद गुप्ता की अध्यक्षता में आयोजित किया गया जिसमें पंडित शिवकुमार कौशिक और श्री रघुवीर आर्य के पौरोहित्य में पंच कुण्डीय यज्ञ का आयोजन हुआ। इस अवसर पर श्री सत्यव्रत जी सामवेदी, श्री अमरमुनि, स्वामी आर्यवेश जी, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली के साथ श्री विरजानन्द जी आदि विद्वानों ने अपने उद्बोधन प्रदान किए। आर्य समाज के प्रधान श्री प्रदीप आर्य ने सभी के प्रति आभार प्रकट किया।

१३ वाँ आर्य परिवार युवक युवती वैवाहिक परिचय सम्मेलन सम्पन्न

समान गुण-कर्म-स्वभाव वालों के बीच विवाह सम्बन्ध स्थापित हों, इस प्रयास को साकार करने हेतु सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्वावधान में १२ ऐसे सम्मेलन हो चुके हैं। यह १३ वाँ सम्मेलन गुजरात आर्य प्रतिनिधि सभा के निर्देशन में रोजड़ वानप्रस्थ साधक आश्रम, गुजरात में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के मुख्य अतिथि श्री सुरेशचन्द्र अग्रवाल, प्रधान सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, दिल्ली थे। कार्यक्रम का सफल निर्देशन राष्ट्रीय संयोजक श्री अर्जुनदेव चड्ढ़ा ने किया। - अविन्द पाण्डेय

नवनिर्मित कक्षों का लोकार्पण

दयानन्द कन्या विद्यालय, हिरणमगरी, उदयपुर में विद्यालय भवन का विस्तार करते हुए चार कक्षों का निर्माण करवाया गया जिसका लोकार्पण एक सादे समारोह में दिनांक १२ फरवरी २०१६ बसन्त पंचमी के दिन किया गया। कार्यक्रम की अध्यक्षता श्री अशोक आर्य, कार्यकारी अध्यक्ष, श्रीमद् दयानन्द सत्यार्थ प्रकाश न्यास, उदयपुर ने की तथा मुख्य अतिथि डॉ. वी. के. राजवंशी तथा विशिष्ट अतिथि श्री भवानीदास आर्य थे। इस अवसर पर आयोजित पंचकुण्डीय यज्ञ के पुरोहित श्री सत्यप्रिय शास्त्री, मंत्री आर्य समाज पिछोली, उदयपुर थे। इस अवसर पर प्रमुख दानदाताओं डॉ. वी. के. राजवंशी, डॉ.अमृतलाल तापड़िया, श्रीमती शारदा गुप्ता, श्री कृष्ण कुमार सोनी एवं इनके परिवारजनों का अभिनन्दन किया गया। डॉ. राजवंशी ने शैड के लिए १.५ लाख रु. और देने की घोषणा की। इस अवसर पर आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्त्ता श्री भँवरलाल आर्य एवं डॉ. अमृतलाल तापड़िया का आर्य समाज की ओर से अभिनन्दन किया गया। कार्यक्रम का सफल संचालन श्री भूपेन्द्र शर्मा ने किया।

- ललिता मेहरा, मंत्री, आर्य समाज, हिरणमगरी, उदयपुर

त्रिदिवसीय प्रेरणास्पद कार्यक्रम सम्पन्न

स्वर्गीय श्री बलवीर सिंह डोडिया की स्मृति में २८ से ३० जनवरी २०१६ तक श्री मानस नाथ विकलांग विकास संस्थान, उदयपुर के तत्वावधान में सम्पन्न हुआ। अनेक कार्यक्रमों के साथ २६ जनवरी २०१६ को प्रतिभा सम्मान व पुरस्कार वितरण समारोह सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम के समापन अवसर पर 'दिव्योदय' के नाम से एक संकल्प लिया गया जिसमें स्वच्छ घर-स्वच्छ शहर तथा बाल-भिक्षा-वृत्ति मुक्त उदयपुर का लक्ष्य रखा गया। - भरत कुमावत, संयोजक

शोक समाचार

आर्य जगत् के प्रसिद्ध विद्वान् (स्मृतिशेष) पण्डित मदन मोहन विद्यासागर जी की धर्मपत्नी का निधन दिनांक १६ फरवरी २०१६ को हो गया। माताजी ने न्यास को पण्डित मदन मोहन विद्यासागर जी के निधन के पश्चात् उनकी पुस्तकालय जिसमें अनेकों अप्राप्य पुस्तकें हैं से लगभग १३००० पुस्तकें भेंट की थीं। न्यास एवं सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से दिवंगत आत्मा को भावभीनी श्रद्धांजलि। प्रभु से प्रार्थना है कि वे दिवंगत आत्मा को अपनी ममतामयी गोद में स्थान प्रदान करें।

आर्य समाज, निम्बीजोधा (नागौर) के प्रधान श्री नानूराम जी के पिता चौधरी डावा राम जी का निधन १४ दिसम्बर १५ को हुआ। विशेष बात यह रही कि अन्त्येष्टि संस्कार पूर्णतः वैदिक रीति से सम्पन्न किया गया और अवशिष्ट भस्म और अस्थियों को भी ऋषि के निर्देशानुसार इनके खेत में विसर्जित किया गया।

विवाह संस्कार सम्पन्न

न्यास के अत्यन्त सहयोगी मित्तल परिवार में श्री महेश मित्तल की

सुपुत्री सुरभि मित्तल का शुभ विवाह इन्दौर निवासी श्री सत्यनारायण जी के सुपुत्र श्री अंचल के साथ सम्पन्न हुआ। इस मांगलिक अवसर पर न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से मित्तल परिवार को ढ़ेर सारी शुभकामनाएँ। हम प्रभु से प्रार्थना करते हैं कि वे नवदम्पति को चतुर्दिक उन्नति प्रदान करें।

वेद वेदांग ज्योतिष सम्मेलन

वैदिक मिशन, मुम्बई के तत्वावधान में आर्य समाज सान्ताक्रुज, मुम्बई के सभागार में दिनांक २६-२७ मार्च २०१६ में वेद वेदांग ज्योतिष सम्मेलन का आयोजन किया जा रहा है। वैदिक मिशन के अध्यक्ष डॉ. सोमदेव शास्त्री ने बताया कि स्वामी प्रणवानन्द जी की अध्यक्षता में आयोज्य इस सम्मेलन में देश-विदेश से पधारे विद्वानों तथा संन्यासियों द्वारा ग्रह-उपग्रह-नक्षत्र-लग्न-मुहूर्त-जन्मकुण्डली-शुभ-अशुभ, गणित और फलित ज्योतिष विषयों पर मन्थन किया जावेगा।

सम्मेलन का उद्घाटन आर्य प्रतिनिधि सभा, मुम्बई के प्रधान श्री मिठाईलाल सिंह द्वारा किया जावेगा।

- संदीप आर्य, मंत्री

साध्वी उत्तमायति जी सम्मानित

महर्षि दयानन्द के जन्म दिवस के शुभ अवसर पर माननीय प्रधानमंत्री जी के सान्निध्य में आदरणीय दीदी साध्वी उत्तमायति जी को सम्मानित

किया गया, यह हम सब के निकट गौरव का विषय है। साध्वी जी ने सार्वदेशिक आर्य वीरांगना दल में अधिष्ठाता पद पर रहते हुए अनेक कार्य किए तथा हिन्दुस्तान ही नहीं विदेशों में भी आपके द्वारा वैदिक प्रचारार्थ अनेक कार्य किए गये। साध्वी उत्तमायति जी निश्चित रूप से इस पुरस्कार के लिए सर्वाधिक उपयुक्त पात्र हैं। दीदी को न्यास तथा सत्यार्थ सौरभ परिवार की ओर से हार्दिक बधाई एवं शुभकामनाएँ।

वैवाहिक विज्ञापन

आर्य परिवार की ३२ वर्षीया, ५'- ३'' सुन्दर, सुशील, एम. टेक. (कम्प्यूटर साइन्स इंजीनियरिंग), पीएच.डी. में अध्ययनरत विश्वविद्यालय में असिसटेन्ट प्रोफेसर कन्या हेतु, उच्च शिक्षित, उच्च सेवारत, शाकाहारी, निर्व्यसनी वर की तलाश है।

सम्पर्क

m.vidyarthi1@gmail.com, Mobile 09421830561

प्रतिस्वर

मैं सत्यार्थ सौरभ का आजीवन सदस्य हूँ। मैं इसको पढ़ता हूँ तो मुझे बहुत आनन्द आता है। मेरी उम्र ६६ वर्ष है फिर भी मैं इसमें बहुत रुचि लेता हूँ साथ में आपने जो सत्यार्थप्रकाश पहेली प्रारम्भ किया है उनका उत्तर ढूंढ़ने के लिए सत्यार्थप्रकाश का स्वाध्याय भी करता हूँ। इस कार्य से सत्यार्थप्रकाश पढ़ने में आर्यों की अधिक रुचि रहेगी। इस से सत्यार्थप्रकाश की माँग अधिक रहेगी। यह प्रचार का अति सुन्दर साधन है। इस कार्य के लिए मैं परामर्शदाता सम्पादक मण्डल को हार्दिक धन्यवाद देता हूँ। इसको मैं पूरे नागौर जिले में तथा आर्य समाजों को बताता हूँ कि यह प्रचार का अति सुन्दर माध्यम है।

- किशनाराम आर्य बीलू, प्रधान

आदरणीय अशोक आर्य जी, सादर नमस्ते

कल 'सत्यार्थ सौरभ' का जनवरी २०१६ अंक मिला। आभारी हूँ। पिछले दिनों मैंने आपको (एवं श्री नवनीत आर्य जी को भी) ई-मेल भेजी थी, अपने द्वारा प्रचारार्थ तैयार किया 'सत्यार्थप्रकाश का संक्षिप्त परिचय' पृथक् डाक से भेजा था, पर उत्तर से वंचित रहा। मेरा अनुमान है कि यह अंक श्री वीरेंद्र मित्तल जी के आग्रह पर आपने भिजवाया होगा। जो भी हो, अंक पाकर जितनी प्रसन्नता हुई, उसकी सामग्री पढ़कर वह कई गुनी बढ़ गई। 'सर्वव्यापी अंधविश्वास', ''मोर्चा 'अंधविश्वास' के खिलाफ'' तथा अवार्ड वापसी के विरोध में 'The other side of coin' जैसी सामग्री के लिए आपको बहुत-बहुत बधाई।

सत्यार्थ सौरभ का हर अंक ऐसी ही प्रेरक और उपयोगी सामग्री देता रहे, इसी कामना के साथ।

- रवीन्द्र अग्निहोत्री

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री सम्मानित

अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त वैदिक विद्वान् आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री को

आर्य समाज, रमेश नगर, नई दिल्ली की ओर से 'विश्व वेद प्रचारक सम्मान' से विभूषित किया गया। इस अवसर पर दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के महामंत्री श्री विनय आर्य एवं माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट के अध्यक्ष प्राचार्य श्री अरुण आर्य उपस्थित थे।

सत्यार्थ प्रकाश पहेली - १/१६ के विजेता

सत्यार्थ प्रकाश पहेली के संदर्भ में हमें उत्साहजनक प्रतिक्रियाएँ प्राप्त हो रही हैं। **सत्यार्थ प्रकाश पहेली- १/१६** के चयनित विजेताओं के नाम इस प्रकार हैं- श्री इन्द्रजित देव, यमुनानगर (हरि.), श्री रमेशचन्द्र गुप्ता, दिल्ली, श्री संजय आर्य, नाहरी (हरि.), श्री रमेशचन्द्र प्रियदर्शन, सीतामढ़ी (बिहार), श्री रमेश आर्य, गुरदासपुर (पंजाब), किरण आर्या, कोटा (राज.), श्री सत्यनारायण तोलम्बिया, शाहपुरा (राज.), मीना वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात), धर्मिष्ठा वासुदेवभाई ठक्कर, साबरकांठा (गुजरात)। उपर्युक्त सभी सत्यार्थ सौरभ के सुधी पाठकों को हार्दिक बधाई।

ध्यातव्य- पहेली के नए नियम पृष्ठ ३० पर अवश्य पढ़ें।

कथा सरित

जूते

एक नगर में एक राजा रहता था। राजा जब भी महल से बाहर जाता, हमेशा अपने घोड़े पर ही जाता था। एक बार वह अपने नगर को देखने एवं जनता की समस्याओं को सुनने के लिए पैदल ही भ्रमण पर निकला। उस समय जूते नहीं होते थे इसलिए जमीन पर कंकड़ और पत्थरों के कारण राजा के पैर दुखने लगे। राजा ने इस समस्या के हल के लिए अपने मंत्रियों की एक बैठक बुलाई।

ज्यादातर मंत्रियों का यही सुझाव था कि क्यों न पूरे नगर के रास्ते को चमड़े की मोटी परत से ढक दिया जाए।

लेकिन इसके लिए बहुत सारे धन एवं अन्य संसाधनों की जरूरत थी।

तभी राजा के पास खड़े एक सिपाही ने सुझाव दिया कि पूरे नगर को चमड़े की परत से ढकने से अच्छा यह है कि क्यों न हम अपने पैरों को ही चमड़े की परत से ढक दें। इससे न केवल हमारे पैर सुरक्षित रहेंगे बल्कि ज्यादा धन भी खर्च नहीं होगा।

सिपाही का सुझाव सुनकर राजा प्रसन्न हुआ और उसने सभी के लिए 'जूते' बनवाने का आदेश दिया।

स्वास्थ्य

त्रिफला

त्रिफला तीन पदार्थों को मिलाकर बनता है- एक- आमला दूसरी-हरड़ और तीसरा बहेड़ा। आयुर्वेद में त्रिफला को अत्यंत महत्वपूर्ण समझा जाता है। इसमें हरड़ जहाँ एक ओर सभी दोषों में सन्तुलन स्थापित करता है वहीं आँखों और पाचन संस्थान के लिए लाभदायक माना गया है। आमला विटामिन सी का बहुत अच्छा स्रोत होने से एंटी आक्सीडेंट का कार्य करता है। बहेड़ा पित्त और कफ के दोषों का निवारण करता है।

त्रिफला सेवन के लाभ -

१. त्रिफला खाँसी, सूजन आदि को दूर करने के साथ एंटी-वाइरल, एंटी-केंसर तथा एंटी-एलर्जिक माना जाता है।
२. अपने घटक आमला के कारण त्रिफला आँखों की अनेक समस्याओं को दूर करता है।
३. त्रिफला बुद्धि-वर्धक माना जाता है।
४. शरीर से अतिरिक्त वसा को कम करने में आमला को अत्यधिक उपयोगी माना जाता है।
५. मूत्र नली की पथरी को निकालने में त्रिफला असरदायक है।
६. यह रक्त परिसंचरण को सही करता है तथा उच्च रक्तचाप के नियंत्रण में लाभकारी माना जाता है।
७. त्रिफला शरीर के सभी तंत्रों की सफाई कर त्वचा में चमक लाता है।
८. त्रिफला ऊतकों का वृद्धिकारक एवं स्वास्थ्य वर्धक है।
९. यह हृदय तथा लिवर की वसा को दूर करता है।
१०. त्रिफला दृष्टि, बाल तथा आवाज के लिए अत्यन्त लाभदायक है।
११. स्वास्थ्य के लिए लाभदायक इसके घटकों के कारण लम्बी आयु के लिए इसका सेवन उचित माना गया है।
१२. कब्ज दूर करने में त्रिफला-सेवन अत्यंत लाभदायक माना गया है।

सत्यार्थ-पीयूष

धर्मो रक्षति रक्षितः

महर्षि दयानन्द ने अपने राजनीतिक सिद्धान्तों के परिप्रेक्ष्य में जगह-जगह धर्म का स्वरूप निरुपित किया है। कुछ उदाहरण द्रष्टव्य हैं। परन्तु पाठकों को ध्यान रखना चाहिए कि इन सभी स्थलों में धर्म का अर्थ कर्त्तव्य तथा मानवीय मूल्य जैसे उदात्त अभिप्राय हैं। अतः धर्म का परित्याग अवनति की ओर ले जाता है। उदाहरण के तौर पर यदि शिक्षक अपना शिक्षा धर्म परित्याग कर दे तो राष्ट्र में अज्ञान, अंधविश्वास और कुसंस्कार का साम्राज्य होगा। दुकानदार यदि अपने धर्म को छोड़ दे तो कृष्णधन का साम्राज्य होगा। राजकर्मचारी अपने धर्म को छोड़ दे, तो उत्कोच और भ्रष्टाचार का साम्राज्य होगा। संसद सदस्य, मंत्री इत्यादि यदि अपना धर्म छोड़ दें तो अन्याय, अत्याचार, भ्रष्टाचार, अराजकता और अव्यवस्था

का साम्राज्य होगा और प्रजा यदि अपने राष्ट्र धर्म को भुला बैठे तो अराजकता और अव्यवस्था का साम्राज्य होगा।

धर्म का वास्तविक स्वरूप

१. धर्म तो पक्षपातरहित न्यायाचरण, सत्य का ग्रहण, असत्य का परित्याग, वेदोक्त ईश्वर की आज्ञा का पालन, परोपकार, सत्यभाषणादि लक्षण सब आश्रमियों का अर्थात् सब मनुष्य मात्र का एक ही है। (सत्यार्थ प्रकाश समु. ५)

२. आरम्भ में मनुष्य हर प्रकार से सुखी था क्योंकि वेद के अनुकूल चलता था। (वैदिक सम्पत्ति पृ. ६४७)

३. वेद ही आदि सृष्टि का ईश्वरीय कानून है। (वै. सम्पत्ति पृ. ३५)

४. 'मरा हुआ धर्म, मारने वाले का नाश और रक्षित किया हुआ धर्म, रक्षक की रक्षा करता है इसलिये धर्म का हनन कभी न करना, इस डर से कि मारा हुआ धर्म कभी हमको न मार डाले.... इस संसार में एक धर्म ही सुहृद है जो मृत्यु के पश्चात् भी साथ चलता है और सब पदार्थ वा संगी शरीर के नाश के साथ ही नाश को प्राप्त होते हैं अर्थात् सब का संग छूट जाता है परन्तु धर्म का संग कभी नहीं छूटता' (स. प्र. समु. ६)

५. जो 'अनवद्य' अनिन्दनीय अर्थात् धर्मयुक्त कर्म हैं वे ही तुमको करने योग्य हैं अधर्मयुक्त नहीं। (स. प्र. समु. १)

६. जो २ हमारे धर्म युक्त कर्म हैं, उन २ का ग्रहण करो और जो २ दुष्ट कर्म हों उनका त्याग किया करो। (स. प्र. समु. २)

७. वेद विहित कर्मों से पराये उपकार करने में रहते हैं वे नर और नारी धन्य हैं। (स. प्र. समु. ३)

८. पाप कर्म करने की इच्छा कभी न करे। (स. प्र. समु. ३)

९. 'जिस सभा में अधर्म से घायल होकर धर्म उपस्थित होता है- जो उसका शल्य अर्थात् तीरवत् धर्म के कलंक को निकालना और अधर्म का छेदन नहीं करते अर्थात् धर्मी का मान और अधर्मी को दण्ड नहीं मिलता, उस सभा में जितने सभासद् हैं, वे सब घायल के समान समझे जाते हैं।' (स. प्र. समु. ६)

१०. जिस सभा में अधर्म से धर्म, असत्य से सत्य सब सभासदों के देखते हुए मारा जाता है उस सभा में सब मृतक के समान हैं, जानो उनमें कोई भी नहीं जीता। (स. प्र. समु. ६)

११. 'जो धार्मिक राजा हो उससे विरोध कभी न करें किन्तु उससे सदा मेल रखें'। (स. प्र. समु. ६)

१२. राजाओं का प्रजापालन ही करना परमधर्म है। (स. प्र. समु. ६)

१३. वेदानुकूल ही आचरण करना धर्म है। (स. प्र. समु. ११)

१४. जब वृद्धि के कारण वेदादि सत्यशास्त्रों का पठन-पाठन ब्रह्मचर्य्यादि आश्रमों का यथावत् अनुष्ठान, सत्योपदेश, होते हैं तभी देशोन्नति होती है। (स. प्र. समु. ११)

१५. अर्थात् जब तक मनुष्य धार्मिक रहते हैं तभी तक राज्य बढ़ता रहता है और जब दुष्टाचारी होते हैं तब नष्ट भ्रष्ट हो जाता है। (स. प्र. समु. ६)

१६. जो सभापति रूप राजा आदि प्रधान पुरुष हैं वे सब सभा वेदानुकूल होकर प्रजा के साथ पिता के समान बर्तें। (स. प्र. समु. ६)

१७. मनुष्य मात्र को वेदानुकूल चलना समुचित है।

१८. अर्थात् जैसी धर्मयुक्त राजनीति है उसके अनुसार चल के न्याय से प्रजा का पालन करना होगा। (स. प्र. समु. ६)

उपरोक्त सभी उद्धरणों पर गहण चिन्तन मनन करने से धर्म का अभिप्राय स्पष्ट होता है।

सम्पादक- अशोक आर्य

आर्यरत्न डॉ. ओमप्रकाश (म्याँमार) स्मृति पुरस्कार

"सत्यार्थ-भूषण" पुरस्कार

₹ 5100

कौन बनेगा विजेता

- न्यास की मासिक पत्रिका सत्यार्थ सौरभ का सदस्य होना आवश्यक है।
- हल की हुयी पहेली अन्तिम तिथि से पूर्व न्यास कार्यालय में पहुँचे यह सुनिश्चित करें।
- अपना सत्यार्थ सौरभ सदस्यता क्रमांक हल की हुयी पहेली के ऊपर अवश्य अंकित करें।
- लिफाफे के ऊपर 'सत्यार्थप्रकाश पहेली क्रमांक' अवश्य अंकित करें।
- १२ शुद्ध हल प्रेषित करने वालों में से एक चयनित विजेता को 'सत्यार्थ-भूषण' की उपाधि, प्रमाण-पत्र तथा ₹५१०० नकद प्रदान किए जावेंगे।
- आयु, लिंग, योग्यता की कोई बाधा नहीं। आबाल-वृद्ध, नर-नारी, छोटे-बड़े सभी पात्र हैं।
- विश्व भर के लोगों से सत्यार्थ सौरभ मासिक पत्रिका के अन्तर्गत 'सत्यार्थकाश पहेली' में भाग लेने का अनुरोध है।

नवीन नियम

- वर्ष भर में एक (१) के स्थान पर चार (४) पुरस्कारों के साथ ही नियमों में सकारात्मक परिवर्तन कर ऐसी व्यवस्था की गई है कि वर्ष में एक बार भाग लेने वाले/अथवा एक बार ही सफलता प्राप्त करने वाले भी पुरस्कार से वंचित न हों।
- पहेली का सही हल प्रेषित करने वाले प्रतिभागियों को ४ भागों में विभक्त किया जावेगा।
  - (अ) सम्पूर्ण वर्ष में समस्त १२ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (ब) सम्पूर्ण वर्ष में ८ से ११ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (स) सम्पूर्ण वर्ष में ५ से ७ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
  - (द) सम्पूर्ण वर्ष में १ से ४ पहेलियों का शुद्ध उत्तर प्रेषित करने वाले।
- वर्षान्त में प्रत्येक समूह में से एक विजेता का चयन (लाट्री द्वारा) किया जाकर पुरस्कृत किया जावेगा।
- पुरस्कार राशि क्रमशः ₹५१००, ₹११००, ₹७०० तथा ₹५०० होगी। अन्य सभी नियम पूर्वानुसार।

सत्यार्थप्रकाश प्रचार सहयोग निधि

- सत्यार्थ प्रकाश से उत्कृष्ट कोई ग्रन्थ नहीं जिसके प्रकाशन में आपकी पुण्य दान राशि का प्रयोग हो। सत्यार्थ प्रकाश प्रचार हेतु,कम राशि में अधिक संख्या में यह महान् ग्रन्थ जन-जन के हाथों में पहुँच सके, एतदर्थ निम्न योजना निर्मित की गई है:-
- सत्यार्थप्रकाश के प्रचार हेतु कृपया निम्नानुसार सहयोग कर **लागत मूल्य से आधी कीमत में** सत्यार्थप्रकाश का दिया जाना सुनिश्चित करें। आपके द्वारा सहयोगार्थ प्रदान की गई राशि के समक्ष अंकित प्रतियों पर आपका अथवा आपके किसी प्रियजन का चित्र ग्रन्थ पर दिया जावेगा।

राशि	प्रतियों की संख्या	राशि	प्रतियों की संख्या
एक लाख रु.	दस हजार	७५०००	७५००
५००००	५०००	२५०००	२५००
१००००	१०००	इससे स्वल्प राशि देने वाले दानवीरों के नाम ग्रन्थ में अंकित किये जायेंगे।	

आपका दान आयकर अधिनियम की धारा ८० जी के अंतर्गत करमुक्त होगा। राशि न्यास के नाम ड्राफ्ट या चैक द्वारा भेजें अथवा यूनियन बैंक ऑफ इंडिया, उदयपुर खाता क्रमांक ३१०१०२०१००४१५१८ में जमा कर सूचित करें।

निवेदक

भवानीदास आर्य मंत्री-न्यास	भंवरलाल गर्ग कार्यालय मंत्री	डॉ.अमृत लाल तापड़िया उपमंत्री-न्यास

सत्यार्थ सौरभ के वर्तमान ग्राहकों के लिए रियायती योजना

आपकी सदस्यता को यदि आप पंचवर्षीय सदस्यता में परिवर्तित करते हैं तो चार सौ की बजाय केवल तीन सौ रु. भेज दें तो आपको पंचवर्षीय सदस्यता सूची में नामित कर लिया जायेगा। इसी प्रकार अगर आप आजीवन सदस्य बनना चाहते हैं तो बजाय एक हजार रु. के मात्र नौ सौ रु. प्रेषित करने का श्रम करें तो आपको आजीवन सदस्यता सूची में सम्मिलित कर लिया जायेगा।

संरक्षक मण्डल - सत्यार्थ सौरभ (₹११,०००)

स्वामी (डॉ.) ओमानन्द सरस्वती, श्रीमान् आनन्द कुमार आर्य, श्री आर.डी. गुप्त, श्री भवानी दास आर्य, श्री सुरेश चन्द्र अग्रवाल, श्री रतिराम शर्मा, श्री दीनदयाल गुप्त, श्री बी.एल. अग्रवाल, श्री कै. देवरत्न आर्य, श्री चन्दूलाल अग्रवाल, श्री मिठाईलाल सिंह, श्री नारायण लाल मित्तल, श्री सुधाकर पीयूष,श्रीमती शारदा गुप्ता, आर्य परिवार संस्था कोटा, श्रीमती आभाआर्या, गुप्त दान दिल्ली, आर्यसमाज गाँधीधाम, गुप्तदान उदयपुर, श्री राजकुमार गुप्ता एवं सरला गुप्ता, श्री मोती लाल आर्य, श्री लक्ष्मण सराफ, श्रीमती पुष्पा गुप्ता, श्री जयदेव आर्य, श्री श्रवण कुमार गुप्ता, श्रीमती सरोज वर्मा, श्री विवेक बंसल, श्री दीपचंद आर्य, श्री एम.पी. सिंह, प्रो. आर.के.एरन, श्री खुशहालचन्द आर्य, श्री विजय तायलिया, श्री वीरेन्द्र मित्तल, स्वामी (डॉ.) आर्येशानन्द सरस्वती, स्वामी प्रवासानन्द सरस्वती, स्वामी प्रणवानन्द सरस्वती, श्री राव हरिश्चन्द्र आर्य, श्री भारतभूषण गुप्ता, श्री कृष्ण चौपड़ा, श्री रामप्रकाश छाबड़ा, श्री विकास गुप्ता, श्री एम. विजेन्द्र कुमार टाक, श्री नरेश कुमार राणा, डॉ.मोतीलाल शर्मा, डी.ए.वी. एकेडमी, टाण्डा, श्री प्रधान जी, मध्यभारतीय आ. प्र. सभा, श्री रघुनाथ मित्तल, मिश्रीलाल आर्य कन्या इण्टर कॉलेज, टाण्डा, श्री प्रह्लादकृष्ण एवं श्रीमती प्रभा भार्गव श्री लोकेश चन्द्र टांक, श्रीमती गायत्री पंवार, डॉ. वेद प्रकाश गुप्ता, श्री वीरमुखी, डॉ. अमृतलाल तापड़िया, आर्य समाज हिरणमगरी, उदयपुर, श्री सुरेशपाल, यू.एस.ए., श्री राजेन्द्र कुमार सक्सेना, कोटा, श्रीमती सुमन सूद, कन्डा घाट (सोलन), माता शीला सेठी, न्यूजर्सी, डॉ. एस. के. माहेश्वरी, उदयपुर, श्री राजेश तिवारी (शिक्षक), ग्वालियर, श्रीमती सविता सेठी, चण्डीगढ़, डॉ. पूर्णसिंह डबास, नई दिल्ली, श्री बृज वधवा, अम्बाला शहर, श्री हजारी लाल आर्य, उदयपुर, डॉ. सत्यप्रकाश, हरदोई

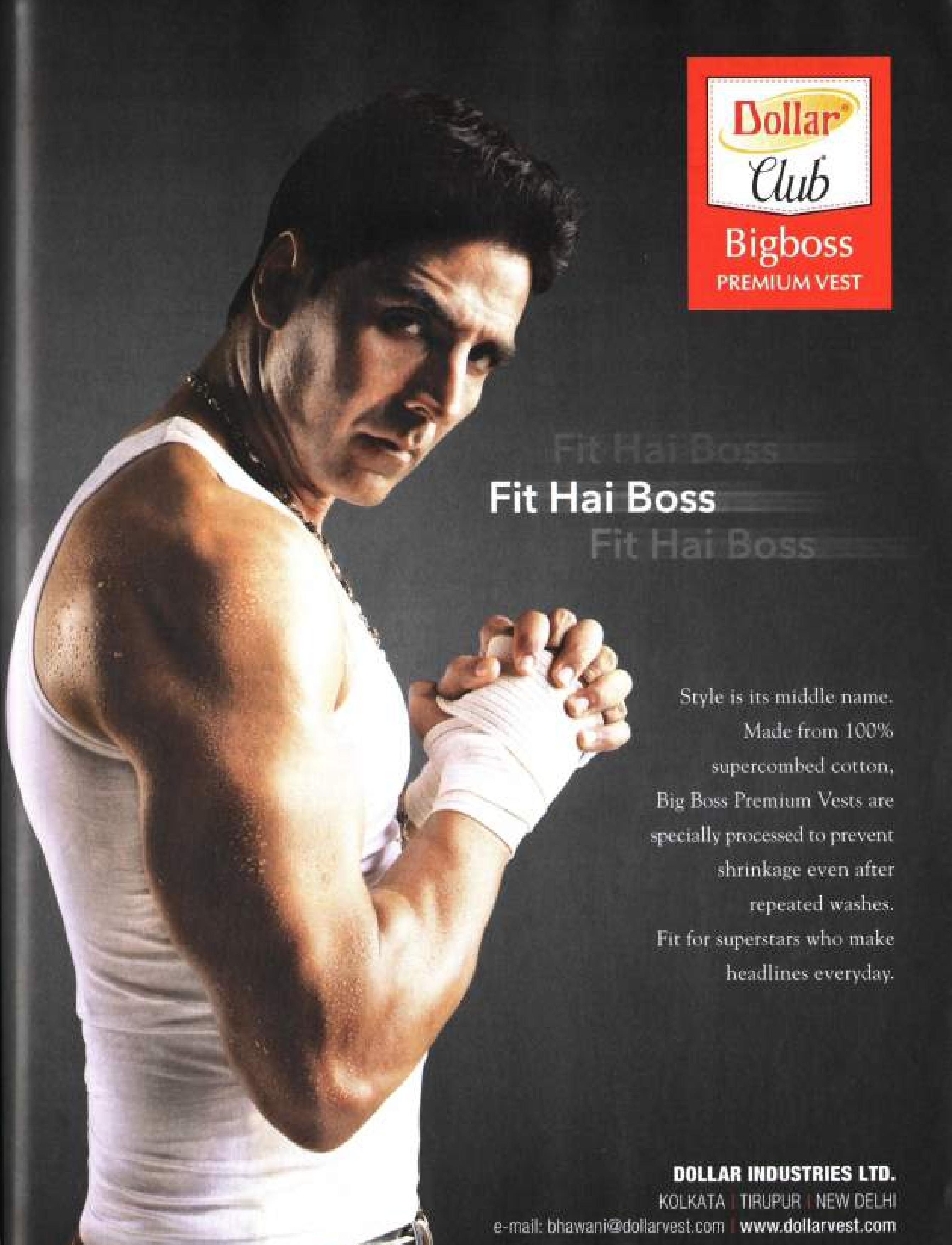
Dollar
Club
Bigboss
PREMIUM VEST
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Fit Hai Boss
Style is its middle name.
Made from 100%
supercombed cotton,
Big Boss Premium Vests are
specially processed to prevent
shrinkage even after
repeated washes.
Fit for superstars who make
headlines everyday.
DOLLAR INDUSTRIES LTD.
KOLKATA | TIRUPUR | NEW DELHI
e-mail: bhawani@dollarvest.com | www.dollarvest.com

RNI Registration No. RAJHIN/2012/47777 March-2016 Postal Registration No. RJ/UD/29-107/2016-2018

जैसे माता सन्तानों पर प्रेम, उन का हित करना चाहती है, उतना अन्य कोई नहीं करता।

– सत्यार्थप्रकाश पृ. २८

स्वत्वाधिकारी, श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास, उदयपुर की ओर से प्रकाशक, मुद्रक अशोक कुमार आर्य द्वारा चौधरी ऑफसेट प्रा. लि., 11/12 गुरुरामदास कॉलोनी, उदयपुर से मुद्रित
प्रेषण कार्यालय– श्रीमद्दयानन्द सत्यार्थप्रकाश न्यास नवलखा महल गुलाबबाग, महर्षि दयानन्द मार्ग, उदयपुर–313001 से प्रकाशित, सम्पादक–अशोक कुमार आर्य

मुद्रण दिनांक- प्रत्येक माह की ३ तारीख | प्रेषण दिनांक- प्रत्येक माह की ७ तारीख | प्रेषण कार्यालय- शास्त्री सर्कल, पोस्ट ऑफिस, उदयपुर